Website : www.mantrabharat.com

जुनून है सच लिखने का

हिन्दी दैनिक

E-Mail : mantragwalior@gmail.com

संस्करण : ग्वालियर
वर्ष : 03
अंक : 142
पृष्ठ : 6
मूल्य : 2.00
सोमवार,22 दिसम्बर 2025

मंत्र भारत

ग्वालियर, मुम्बई, लखनऊ एवं प्रयागराज,से एक साथ प्रकाशित एवं गोरखपुर, वाराणसी, आजमगढ़ से प्रसारित

3 चोरों ने ज्वेलरी शॉप का शटर काटा

4 एक भयावह त्रासदी की बाकी है कसक

5 'धुरंधर' के गाने 'शरारत' के लिए तमन्ना भाटिया थीं पहली पसंद

सीएम योगी ने किसानों को दिया बड़ा तोहफा

एलडीबी से 6 प्रतिशत ब्याज पर मिलेगा ऋण

■ मुख्यमंत्री ने किया युवा सहकार सम्मेलन एवं यूपी को-ऑपरेटिव एक्सपो का शुभारंभ ■ विश्वास, सामाजिक समता, आत्मनिर्भरता की गारंटी है सहकारिता- योगी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के अंतर्गत इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान के जूपिटर हॉल में युवा सहकार सम्मेलन एवं यूपी को-ऑपरेटिव एक्सपो-2025 का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री ने इस क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित भी किया। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लघु व सीमांत किसानों को बड़ी सौगात दी। प्रदेश के अंदर यूपी सहकारी ग्राम विकास बैंक का रेट ऑफ इंटरेस्ट लगभग साढ़े 11 फीसदी है। किसानों को इसका काफी ब्याज देना होता है। सरकार इसे कम करने की दिशा में बढ़ रही है। लघु व सीमांत किसान को यह लोन अब महज 6 फीसदी पर मिले। मुख्यमंत्री कृषक समृद्धि योजना के अंतर्गत छह प्रतिशत पर लोन एलडीबी के माध्यम से उपलब्ध कराएंगे। शेष योगदान राज्य सरकार की ओर से किया जाएगा। पीएम मोदी के नेतृत्व की केंद्र सरकार ने पहली बार सहकारिता का नया मंत्रालय गठित किया। पहले यह कृषि मंत्रालय के अधीन छोटा आयाम हुआ करता था। पहले सहकारिता मंत्री के रूप में अमित शाह जी सहकारिता आंदोलन को नई ऊंचाई प्रदान कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष घोषित किया है। पीएम मोदी की प्रेरणा से हम लोगों ने सहकारिता के सुदृढ़ीकरण की दिशा में अनेक कदम उठाए हैं। सहकारिता आपसी विश्वास, सामाजिक समता और आत्मनिर्भरता की गारंटी भी है। दुनिया की एक चौथाई सहकारी समितियां भारत में हैं। इनमें 8.44 लाख से अधिक समितियां, 30 करोड़ से अधिक सदस्य पूरे अभियान में सामूहिक शक्ति के रूप में योगदान देने के लिए तत्पर हैं। 11 वर्ष में हमने बदलते भारत में देखा है कि तकनीक का उपयोग कर जीवन को सरल बनाते हुए भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था दी जा रही है। डिजिटलीकरण, ई-गवर्नेंस और पारदर्शी नीतियों के माध्यम से सहकारिता क्षेत्र में भी सुशासन व जवाबदेही सुनिश्चित होने की कार्रवाई बढ़ी है। एम पैक्स के माध्यम से बहुदेश्यीय प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समितियों के सदस्यता का विस्तार, वित्तीय समावेशन को जोड़ते हुए इसे बढ़ाने, कृषि व ग्रामीण विकास को बढ़ाने व सहकारिता आंदोलन को मजबूती प्रदान किया गया है। सहकारिता वर्ष 2025 पर यूपी में पहली बार बड़े पैमाने पर कार्य हुए। 26 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष का शुभारंभ किया गया। रन फॉर कॉरपोरेशन में हजारों लोगों ने सहभागिता की। 21 मार्च 2025 को यूपी स्टेट को-ऑपरेटिव लिमिटेड द्वारा एजीएम का आयोजन किया गया, इसमें स्टेक होल्डर्स को 76 करोड़ रुपये का ऑनलाइन लाभांश वितरित किया गया। छह जुलाई को केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय के चौथे स्थापना दिवस पर 266 ड्रोन दीदियों को भी प्रमाण पत्र वितरित किए गए। 12 सितंबर से 30 नवंबर तक एम पैक्स सदस्यता का महाभियान प्रारंभ हुआ।

संविधान में सबको साथ लेकर चलने की भावना निहित: मोहन भागवत

नईदिल्ली। मोहन भागवत ने कहा कि संविधान एक लिखित साक्ष्य है। पूरे देश-समाज को इसी के अनुरूप चलना पड़ता है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के काल में हम शब्द की कोई मान्यता नहीं थी, क्योंकि वह इस देश को राष्ट्र मानते ही नहीं थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा है कि देश के संविधान में सबको साथ लेकर चलने की भावना निहित है। उन्होंने कहा कि संविधान की प्रस्तावना का पहला शब्द 'हम' यही संदेश देता है कि पूरा भारत वर्ष एक इकाई की तरह है और सभी आपस में मिलकर एक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं है कि यह भावना देश के स्वतंत्र होने के बाद आई, बल्कि भारत भूमि पर धर्म की शुरूआत से ही सबको साथ लेकर चलने की भावना निहित रही है। ऐसा धर्म के कारण होता था जिसमें सबको साथ लेकर चलने और सबके कल्याण की भावना अंतर्निहित है। 'अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना' द्वारा भारतीय इतिहास, संस्कृति और संविधानह्न विषय पर

सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। इसमें अपना उद्बोधन देते हुए मोहन भागवत ने कहा कि संविधान एक लिखित साक्ष्य है। पूरे देश-समाज को इसी के अनुरूप चलना पड़ता है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के काल में हम शब्द की कोई मान्यता नहीं थी, क्योंकि वह इस देश को राष्ट्र मानते ही नहीं थे। संविधान के पृष्ठों पर अंकित चित्र यह बताते हैं कि हमारे संविधान में भारत के मूल धर्म का समावेश है। उन्होंने कहा कि यह इसलिए हुआ क्योंकि भारत का संविधान बनाने वाले लोग भारत के संस्कारों और संस्कृति से सराबोर लोग थे। भागवत ने कहा कि हमें अपनी परम्परा के सही तथ्य को निकालकर सबके सामने प्रस्तुत करना होगा। हमारी परम्परा और संस्कृति से हमारा किस प्रकार जुड़ाव है, इस तथ्य से संविधान के साथ जोड़कर समझदारी के साथ समाज के सामने प्रस्तुत करना पड़ेगा, क्योंकि समझदारी से ही देश चलता है। उन्होंने कहा कि परस्पर भावना के साथ उसका संबल लेते हुए अपना समाज ठीक चलेगा और देश को बड़ा बनाएगा।

सार संक्षेप

रेल किराए में 26 दिसंबर से बढ़ोतरी, जनरल से एसी ट्रेन तक के बढ़ेंगे दाम

नईदिल्ली। रेल यात्रियों के लिए बड़ी ही अहम खबर है। 26 दिसंबर से रेलवे किराए में बढ़ोतरी लागू होने जा रही है। यह बढ़ोतरी मुख्य रूप से लंबी दूरी की यात्राओं पर असर डालेगी, जबकि कम दूरी के यात्रियों को राहत दी गई है। रेलवे के अनुसार, 215 किलोमीटर तक की साधारण श्रेणी की यात्रा पर किराया नहीं बढ़ाया गया है, लेकिन इससे अधिक दूरी तय करने पर साधारण श्रेणी में प्रति किलोमीटर एक पैसा अतिरिक्त देना होगा। मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों में सफर करने वाले यात्रियों के लिए नॉन-एसी और एसी दोनों श्रेणियों में प्रति किलोमीटर दो पैसे की बढ़ोतरी की गई है। इसका असर यह होगा कि अगर कोई यात्री 500 किलोमीटर की नॉन-एसी यात्रा करता है, तो उसे पहले के मुकाबले करीब 10 रुपये ज्यादा किराया चुकाना पड़ेगा।इसे इस तरह समझ सकते हैं कि पटना से दिल्ली की दूरी करीब 1000 किलोमीटर है, इस तरह नए किराये के लिहाज अब आपको जन साधारण एक्सप्रेस में सफर के लिए 10 रुपये अधिक, जबकि संपूर्ण क्रांति, वंदे भारत और राजधानी जैसी ट्रेनों में 20 रुपये अधिक चुकाने होंगे।

जी. किशन रेड्डी ने सोनिया गांधी को लिखा खुला पत्र

हैदराबाद/नईदिल्ली। कोयला और खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने कांग्रेस नेता सोनिया गांधी को एक खुला पत्र लिखा है, जिसमें 2023 तेलंगाना विधानसभा चुनावों के दौरान कांग्रेस के दिये गये आश्वासनों के क्रियान्वयन पर सवाल उठाये गये हैं। पत्र में किशन रेड्डी ने हाल ही में मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी द्वारा प्रस्तुत श्तेलंगाना राइजिंग-2047 विजन डॉक्यूमेंट्श का जिक्र किया और सोनिया गांधी द्वारा राज्य सरकार की दृष्टि एवं दो वर्ष के शासन की सराहना करने संबंधी मीडिया रिपोर्टों का उल्लेख किया।उन्होंने इसका विरोधाभास कांग्रेस के घोषणा-पत्र श्अभयहस्तमश एवं चुनाव प्रचार के दौरान सार्वजनिक रूप से घोषित छह गारंटियों से जोड़ा, तथा पूछा कि क्या पार्टी नेतृत्व ने सत्ता में आने के बाद इनके क्रियान्वयन की समीक्षा की है। कांग्रेस पर वादे पूरे न करने का आरोप लगाते हुए केंद्रीय मंत्री ने राज्य सरकार पर चुनावी गारंटियों को दरकिनार कर विकास की नई दृष्टि पेश करने का इल्जाम लगाया। उन्होंने कांग्रेस नेतृत्व से किसानों, महिलाओं, बेरोजगार युवाओं, छात्रों, दलितों, आदिवासियों एवं पिछड़े वर्गों से किये गये वादों पर स्पष्टता मांगी तथा चेतावनी दी कि अधूरे वादे भविष्य में जनता की नाराजगी को आमंत्रित कर सकते हैं।

शहीद स्मारक पहुंचे पीएम मोदी

असम आंदोलन के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

गुवाहाटी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को गुवाहाटी स्थित शहीद स्मारक क्षेत्र में असम आंदोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि दी। असम आंदोलन विदेशी विरोधी आंदोलन था। प्रधानमंत्री मोदी ने स्मारक क्षेत्र में स्थापित दीप के सामने पुष्पांजलि अर्पित की। यह दीप 1979 से 1985 तक छह साल चले आंदोलन में शहीद हुए 860 लोगों की स्मृति में सदैव प्रज्वलित रहता है। करीब 20 मिनट के अपने दौरे के दौरान प्रधानमंत्री ने स्मारक परिसर का भ्रमण किया और शहीदों की याद में निर्मित दीर्घा को भी देखा, जहां शहीदों की आवक्ष प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं।

इस अवसर पर राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य, मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा, केंद्रीय मंत्री सबार्नंद सोनोवाल और असम समझौता कार्यान्वयन मंत्री अतुल बोरा प्रधानमंत्री के साथ मौजूद थे। स्मारक का उद्घाटन इसी महीने की शुरूआत में किया गया था और असम आंदोलन के पहले शहीद खड़गेश्वर तालुकदार की पुण्यतिथि भी उसी दिन थी। खड़गेश्वर तालुकदार का निधन 10 दिसंबर 1979 को हुआ था। अतुल बोरा ने संवाददाताओं से कहा कि प्रधानमंत्री ने शहीदों के बारे में जानकारी ली और मुख्यमंत्री ने उन्हें इस संबंध में संक्षेप में बताया। उन्होंने कहा, यह असम के लिए एक यादगार दिन है। प्रधानमंत्री ने उन शहीदों को श्रद्धांजलि दी जिन्होंने कांग्रेस शासन के दौरान चले छह वर्षीय आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति दी थी। बोरा ने बताया कि प्रधानमंत्री ने खड़गेश्वर तालुकदार की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सहयोगी पार्टी असम गण परिषद (एजीपी) के अध्यक्ष बोरा ने कहा कि प्रधानमंत्री के इस दौरे के बाद पूरी दुनिया असम आंदोलन के बारे में और अधिक जानना चाहेगी। उन्होंने कहा, जब प्रधानमंत्री दीर्घा का दौरा कर रहे थे, तो वह शहीदों के बारे में विस्तार से जानना चाहते थे। इस तरह से अब तक किसी भी प्रधानमंत्री ने असम आंदोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि नहीं दी थी। इसके लिए हम मोदी जी के आभारी हैं। करीब 170 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इस स्मारक में जलाशय, सभागार, प्रार्थना कक्ष, साइकिल ट्रैक और ध्वनि एवं प्रकाश शो की व्यवस्था जैसी सुविधाएं हैं। ध्वनि एवं प्रकाश शो के माध्यम से असम आंदोलन के विभिन्न पहलुओं और राज्य के इतिहास को प्रदर्शित किया जाएगा। यह आंदोलन 15 अगस्त 1985 को असम समझौते पर हस्ताक्षर के साथ समाप्त हुआ था। अवैध प्रवासन का मुद्दा असम के राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में सबसे विवादास्पद विषयों में से एक रहा है। सिर्फ बांग्लादेशी घुसपैठियों के मुद्दे पर राज्य में कई चुनाव लड़े गए हैं।

जी-राम-जी विधेयक पारित करने के खिलाफ 27 दिसंबर को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक

नई दिल्ली। सरकार के मनरेगा की जगह वीबी जी-राम-जी विधेयक पारित करने के खिलाफ कांग्रेस आज देश भर में विरोध प्रदर्शन कर रही है और इस पर उसकी आगे की रणनीति तय करने के बारे में 27 दिसंबर को यहां पार्टी की सर्वोच्च नीति निर्धारक संस्था कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में विचार किया जाएगा। कांग्रेस महासचिव के सी वेणुगोपाल ने रविवार को कहा कि मोदी सरकार ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना (मनरेगा) को प्रभावी रूप से समाप्त कर दिया है और रोजगार गारंटी के इस अधिकार को अनुग्रह में बदल दिया है।वेणुगोपाल ने कहा ष्मनरेगा का काम करने का एक कानूनी अधिकार था, न कि कोई कल्याणकारी योजना। इसकी निधि सीमित और नियंत्रण केंद्रीकृत कर इसकी मांग- आधारित प्रकृति को बदलकर, भाजपा ने इस अधिकार को बजट पर निर्भर योजना में बदल दिया है, जिससे करोड़ों ग्रामीण परिवार असुरक्षा और संकट में धकेल दिये गये हैं। इसके विरोध में कांग्रेस आज देश भर के जिला मुख्यालयों में राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन कर रही है और उन श्रमिकों के साथ खड़ी है जिनकी आजीविका और गरिमा पर हमला हो रहा है।कांग्रेस महासचिव ने कहा कि काम के अधिकार पर इस गंभीर हमले को लेकर पार्टी की कार्यसमिति की 27 दिसंबर को होने वाली बैठक में इस पर चर्चा की जाएगी। इस मुद्दे पर पार्टी के वरिष्ठ नेता जहां विचार-विमर्श करेंगे वहीं इसकी आगे की रणनीति और कार्रवाई के बारे में भी निर्णय लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि कार्य समिति की बैठक के अगले दिन 28 दिसंबर को कांग्रेस स्थापना दिवस पर कार्यकर्ता महात्मा गांधी के चित्र को लेकर देशभर के मंडलों और पंचायतों में कार्यक्रम आयोजित करेंगे और नागरिकों के लिए आदर्शों, न्याय, गरिमा और काम के अधिकार के संवैधानिक वादे के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करेंगे।

खेल मंत्री मांडविया ने किया फिट इंडिया संडेज ऑन साइकिल की पहली वर्षगांठ के समारोह का नेतृत्व

नई दिल्ली। खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने रविवार को यहां फिट इंडिया संडेज ऑन साइकिल पहल की पहली वर्षगांठ के समारोह का नेतृत्व किया जिसमें 1,500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया और यहां रॉक बीच पर साइकिल चलाई। भारत के पूर्व हॉकी गोलकीपर पी आर श्रीजेश और टेबल टेनिस के दिग्गज खिलाड़ी शरत कमल भी इस साइकिल रैली का हिस्सा बने। इस रैली में स्कूली बच्चों, नमो साइक्लिंग क्लब के सदस्यों और पुडुचेरी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित विभिन्न आयु वर्ग और विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों ने भाग लिया। खेल मंत्रालय के अनुसार, फिट इंडिया संडेज ऑन साइकिल पहल पिछले एक साल में देश भर के 700 से अधिक जिलों में दो लाख स्थानों पर आयोजित

की गई जिसमें वर्ष भर में 20 लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। मांडविया ने कहा, जब हमने एक साल पहले इस पहल की शुरूआत की थी तब इसका आयोजन केवल पांच स्थानों पर लगभग 500 प्रतिभागियों के साथ किया जाता था लेकिन अब प्रत्येक रविवार को देश भर में 10,000 से अधिक स्थानों पर इसका आयोजन होता है जिसमें 10 लाख से अधिक नागरिक नियमित रूप से भाग लेते हैं। यहां आयोजित समारोह में जुम्बा, कैरम, शतरंज, मल्लखंब, सिलंबम, योग, रस्सी कूद जैसी गतिविधियां भी शामिल थी। देश के 10,000 से अधिक स्थानों पर रविवार को इसी तरह का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के विजन के तहत स्वदेशी को मिली नई दिशा : मुख्यमंत्री सैनी

हरियाणा। स्वदेशी की अवधारणा अब पारंपरिक उत्पादों तक सीमित नहीं है बल्कि इसे अब प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर, रक्षा उपकरण और सेमीकंडक्टर जैसे आधुनिक क्षेत्रों में भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने रविवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण के साथ स्वदेशी को एक नई दिशा मिली है। सैनी ने कहा कि स्वदेशी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का मूलमंत्र रहा है और महात्मा गांधी ने इसे आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया था। सैनी ने पंचकूला में स्वदेशी महोत्सव-2025 का

उद्घाटन करने के बाद सभा को संबोधित करते हुए कहा, आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत के विजन के साथ स्वदेशी को एक नई दिशा मिली है। सैनी ने युवाओं से आग्रह किया कि वे अपने स्थानीय कौशल को आधुनिक तकनीक के साथ एकीकृत करें और नौकरी चाहने वालों के बजाय रोजगार सृजनकर्ता बनें। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया और एमएसएमई क्षेत्र के लिए विशेष सब्सिडी जैसी योजनाओं के माध्यम से युवा उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वदेशी प्रौद्योगिकी का युवा नेतृत्व वाला विकास न केवल नए उद्यमों को प्रोत्साहित करेगा बल्कि भारत को वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। सैनी ने कहा कि स्वदेशी की अवधारणा अब पारंपरिक उत्पादों तक सीमित नहीं है बल्कि इसे अब प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर, रक्षा उपकरण और सेमीकंडक्टर जैसे आधुनिक क्षेत्रों में भी बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार वैश्विक मानकों के अनुरूप स्थानीय विनिर्माण को विकसित करने की दिशा में लगातार काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और जल्द ही तीसरे स्थान पर पहुंचने की राह पर है।

भाजपा का सिद्धांत एक का धंधा, एक से चंदा, वह हर बड़े कारोबार को गिने-चुने हाथों में समेटने की कर रही कोशिश : अखिलेश

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया है कि वह देश को एक देश, एक कारोबारी की दिशा में ले जाने के गोपनीय एजेंडे पर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा का सिद्धांत अब एक का धंधा, एक से चंदा बन चुका है, जिसके तहत देश के हर बड़े कारोबार को गिने-चुने हाथों में समेटने की कोशिश की जा रही है।

रविवार को अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट करते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा नेतृत्व चंदे की सुविधा के लिए अलग-अलग जगह न जाकर, पूरे आर्थिक तंत्र को कुछ चुनिंदा लोगों के नियंत्रण में देना चाहता है। अपने पैसों की महाभूख को पूरा करने के लिए सरकार और संगठन में ऐसे लोगों को बैठाया गया है, जो बिना किसी सवाल-जवाब के हर फैसले पर हामी भरते हैं।उन्होंने चेतावनी दी कि किसी भी देश के लिए एकाधिकार की भावना घातक होती है चाहे वह राजनीतिक हो, आर्थिक हो या सामाजिक।

आज भाजपा सरकार जिस तरह से नीतियों और नियम-कानूनों में बदलाव कर अन्य औद्योगिक घरानों को कमजोर कर रही है और आर्थिक गतिविधियों को चुनिंदा समूहों तक सीमित कर रही है, उससे देश एक गंभीर और खतरनाक स्थिति की ओर बढ़ रहा है।अखिलेश यादव ने कहा कि इसका अगला परिणाम अनियंत्रित मुनाफाखोरी, महंगाई और अंततः महा-भ्रष्टाचार के रूप में सामने आएगा। एकाधिकारवादी कंपनियों के फायदे के लिए नियम बदले जाएंगे, उपभोक्ताओं से मनमानी वसूली होगी और श्रमिकों का कम धन-अधिक श्रम के उत्पीड़नकारी फामूर्ले के तहत शोषण किया जाएगा।

न किसानों की सुनी जाएगी और न ही पीडीए समाज की जिसका अर्थ है कि देश की लगभग 95 प्रतिशत आबादी शोषण का शिकार बनेगी।अखिलेश यादव ने कहा कि अब समय आ गया है कि देश एकजुट होकर भाजपा से साफ कहे एकाधिकार, नहीं स्वीकार!

प्रियंका गांधी ने मलयालम अभिनेता श्रीनिवासन के निधन पर जताया शोक

परिवार के प्रति व्यक्त की संवेदनाएं

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने मलयालम सिनेमा के दिग्गज अभिनेता, पटकथा लेखक और फिल्ममेकर श्रीनिवासन के निधन पर दुख व्यक्त किया। रविवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट कर प्रियंका ने दिवंगत अभिनेता को श्रद्धांजलि देते हुए उनके परिवार के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर संवेदना व्यक्त करते हुए प्रियंका गांधी ने बताया कि श्रीनिवासन की कला ने भारतीय सिनेमा को समृद्ध किया और करोड़ों लोगों के दिलों को छुआ। प्रियंका गांधी ने पोस्ट में लिखा, ष्मलयालम एक्टर और फिल्ममेकर श्रीनिवासन के निधन से बहुत दुख हुआ। उनकी मानवीय विषयों पर केंद्रित कहानियां, तेज बुद्धि और यादगार परफॉर्मेंस ने भारतीय सिनेमा को समृद्ध किया और

अनगिनत लोगों के दिलों को छुआ। उनके परिवार और चाहने वालों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं।श्रीनिवासन के निधन पर फिल्म जगत और राजनीति से जुड़े कई लोगों ने शोक व्यक्त किया है। अभिनेता दुलकर सलमान, रजनीकांत, ममूटी समेत तमाम एक्टर्स ने दुख व्यक्त किया। श्रीनिवासन का निधन 20 दिसंबर को केरल के कोच्चि में हुआ। वह 69 वर्ष के थे और लंबे समय से स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे थे। वे उम्र से जुड़ी बीमारियों और हृदय संबंधी परेशानियों का सामना कर रहे थे। जानकारी के अनुसार, अभिनेता को साल 2022 में कार्डियक स्ट्रोक हुआ था, जिसके बाद उनकी सर्जरी भी हुई थी।मलयालम सिनेमा के स्तंभ कहे जाने वाले श्रीनिवासन ने अपने पांच दशक लंबे करियर में 200 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया।

रोजगार की गारंटी को भाजपा ने खत्म कर दिया कांग्रेस नेता उदित राज ने किया तंजा

वाराणसी। वाराणसी पहुंचे कांग्रेस नेता उदित राज ने कहा कि हम सड़क से लेकर संसद तक, हर मंच पर इस जन-विरोधी, मजदूर-विरोधी और फेडरल-विरोधी हमले का विरोध करेंगे। हम इस जन-विरोधी, श्रमिक-विरोधी और संघीय-विरोधी हमले का हर मंच पर, सड़क से लेकर संसद तक विरोध करेंगे। मोदी सरकार ने 'सुधार' के नाम पर लोकसभा में एक और बिल पास करके दुनिया की सबसे बड़ी रोजगार गारंटी स्कीम 'मनरेगा' को खत्म कर दिया है। यह महात्मा गांधी की सोच को खत्म करने और सबसे गरीब भारतीयों से काम का अधिकार छीनने की जान-बूझकर की गई कोशिश है। उक्त बातें कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता उदित राज ने वाराणसी में आयोजित एक पत्रकारवार्ता में कही। मनरेगा गांधीजी के ग्राम स्वराज, काम की गरिमा और डिसेंट्रलाइज्ड डेवलपमेंट के सपने का जीता-जागता उदाहरण है, लेकिन इस सरकार ने न सिर्फ उनका नाम हटा दिया है, बल्कि 12 करोड़ नरेगा मजदूरों के अधिकारों को भी बेरहमी से कुचला है। दो दशकों से, नरेगा करोड़ों ग्रामीण परिवारों के लिए लाइफलाइन रहा है और कोविड महामारी के दौरान आर्थिक सुरक्षा के तौर पर जरूरी साबित हुआ है। 2014 से पीएम मोदी मनरेगा के बहुत खिलाफ रहे हैं। उन्होंने इसे 'कांग्रेस की नाकामी की जीती-जागती निशानी' कहा था। पिछले 11 वर्षों में, मोदी सरकार ने मनरेगा को सिस्टमैटिक तरीके से कमजोर किया है। बजट में कटौती करने से लेकर राज्यों से कानूनी तौर पर जरूरी फंड

रोकने, जॉब कार्ड हटाने और आधार-बेस्ड पेमेंट की मजबूरी के जरिए लगभग सात करोड़ मजदूरों को बाहर करने तक। इस जान-बूझकर किए गए दबाव के नतीजे में, पिछले पांच वर्षों में मनरेगा हर साल मुश्किल से 50-55 दिन काम देने तक सिमट गया है। यह सोचा-समझा खत्म करना सत्ता के नशे में चूर एक तानाशाही सरकार की सोची-समझी बदले की कार्रवाई के अलावा और कुछ नहीं है। भाजपा पर साधा निशान मनरेगा संविधान के आर्टिकल 21 से मिलने वाली अधिकारों पर आधारित गारंटी थी। नया फ्रेमवर्क इसे एक कंडीशनल, केंद्र द्वारा कंट्रोल की जाने वाली स्कीम से बदल देता है, जो मजदूरों के लिए सिर्फ एक भरोसा है, जिसे राज्य लागू करेंगे। जो कभी काम करने का सही अधिकार था, उसे अब एक एडमिनिस्ट्रेटिव मदद में बदला लिया जा रहा है, जो पूरी तरह से केंद्र की मर्जी पर निर्भर है। यह कोई सुधार नहीं है; यह गांव के गरीबों के लिए एक संवैधानिक वादे को वापस लेना है। मनरेगा 100% पूरी तरह से केंद्र से फंडेड था। मोदी सरकार अब राज्यों पर लगभग 50,000 करोड़ रुपये या उससे ज्यादा डालना चाहती है, उन्हें 40% खर्च उठाने के लिए मजबूर करके, जबकि केंद्र नियमों, ब्रांडिंग और क्रेडिट पर पूरा कंट्रोल रखता है। यह फाइनेंशियल धोखा है, पीएम मोदी के फेडरलिज्म का एक टेक्स्टबुक एग्जांपल है, जहां राज्य पेमेंट करते हैं, केंद्र पीछे हट जाता है और फिर पॉलिटिकल ओनरशिप का दावा करता है। निजीकरण पर कही ये बात मनरेगा के तहत, सरकारी ऑर्डर से कभी काम नहीं रोका गया। नया सिस्टम हर साल तय टाइम के लिए जबरदस्ती रोजगार बंद करने की इजाजत देता है, जिससे राज्य यह तय कर सकता है कि गरीब कब कमा सकते हैं और कब उन्हें भूखा रहना होगा। एक बार फंड खत्म हो जाने पर, या फसल के मौसम में, मजदूरों को महीनों तक रोजगार से दूर रखा जा सकता है। यह वेलफेयर नहीं है, यह राज्य द्वारा मैनेज किया गया लेबर कंट्रोल है जिसे मजदूरों को प्राइवेट खेतों में धकेलने और गांव की मजदूरी को दबाने के लिए डिजाइन किया गया है। मोदी सरकार ने डीसेंट्रलाइजेशन को भी कुचल दिया है। जो अधिकार कभी ग्राम सभाओं और पंचायतों के पास थे, उन्हें छीनकर सेंट्रलाइज्ड डिजिटल कमांड सिस्टम, जीआईएस मैपिंग, पीएम गति शक्ति लेयर्स, बायोमेट्रिक्स, डैशबोर्ड और एल्गोरिदमिक सर्विलांस को सौंप दिया जा रहा है। तथाकथित 'विकसित भारत इंफ्रास्ट्रक्चर स्टैक' के तहत, स्थानीय जरूरतों को नजरअंदाज किया जा रहा है, तकनीकी गड़बड़ियां बाहर करने का आधार बन रही हैं, और नागरिकों को सरकार के कंट्रोल वाले सर्वर पर गिनती में बदल दिया जा रहा है। बोले- रोजगार नहीं दे रही भाजपा सबसे खतरनाक बात यह है कि मनरेगा के डिमांड-ड्रिवन नेचर को खत्म किया जा रहा है और उसकी जगह एक सीमित, केंद्र द्वारा तय एलोकेशन सिस्टम लाया जा रहा है। इससे केंद्र एकतरफा फंड सीमित कर सकता है, जबकि राज्यों को किसी भी अतिरिक्त रोजगार के लिए सख्ती से केंद्र की शर्तों पर पेमेंट करने के लिए मजबूर किया जा सकता है। यह रोजगार के कानूनी अधिकार को एक बजट-सीमित, अपनी मर्जी की स्कीम में बदल देता है और उन राज्यों को सजा देता है जो भूख और बेरोजगारी पर ध्यान देते हैं। यह कदम महात्मा गांधी के आदर्शों का सीधा अपमान है और ग्रामीण रोजगार पर खुली जंग का एलान है। रिकॉर्ड बेरोजगारी से भारत के युवाओं को तबाह करने के बाद, मोदी सरकार अब गरीब ग्रामीण परिवारों की बची हुई आखिरी आर्थिक सुरक्षा को निशाना बना रही है। नेशनल हेराल्ड पर भी चर्चा 140 करोड़ भारतीयों को एहसास हो गया है कि नेशनल हेराल्ड 'केस' में बीजेपी के आरोप झूठ का पुलिंदा, प्रोपेगैंडा और अपने पॉलिटिकल विरोधियों को किसी तरह कटघरे में खड़ा करने की एक पतली-सी कोशिश के अलावा और कुछ नहीं हैं। पत्रकार वार्ता में राष्ट्रीय प्रवक्ता उदितराज के अलावा महानगर अध्यक्ष राघवेंद्र चौबे, अनिल श्रीवास्तव, प्रदेश प्रवक्ता सजीव सिंह, अमरनाथ पासवान, फसाहत हुसैन, डॉ. राजेश गुप्ता, सतनाम सिंह, राजीव राम, अरुण सोनी, वकील अंसारी समेत कई प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

जिम्मेदार बने उदासीन धड़ल्ले से चल रहे अवैध पैथोलॉजी व अल्ट्रासाउंड सेंटर

बस्ती। जिले में बीते एक माह में करीब आठ अवैध अल्ट्रासाउंड सेंटर बंद कराए जा चुके हैं, इसके बाद भी कई सेंटर गोपनीय तरीके से चल रहे। वहीं, इस कार्रवाई के बाद भी नियमों को ताक पर रखकर भानपुर और देईसाड़ बाजार क्षेत्र में धड़ल्ले से धंधेबाज अपना काम कर रहे हैं। अवैध अल्ट्रासाउंड सेंटर और पैथालॉजी के इस गिरोह पर कड़ी कार्रवाई नहीं हो पा रही है। स्वास्थ्य विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों की अनदेखी से अल्ट्रासाउंड सेंटर और पैथालॉजी बिना पंजीयन सक्रिय हैं। बताया गया कि भानपुर स्थित एक अस्पताल में अवैध अल्ट्रासाउंड मशीन संचालित है, लेकिन इसे स्थानीय अधिकारियों के सह के चलते बंद नहीं करवा रहे हैं। इसी प्रकार देईसाड़ बाजार में बिना पंजीकरण के पैथालॉजी चल रही है। यहां नियमों को दरकिनार करके जांच की जा रही। हाल यह है कि रिपोर्ट पर नाम और मोबाइल नंबर तक दर्ज नहीं है। इससे मरीज छले जा रहे हैं। सूत्रों की माने तो अवैध सेंटर संचालक कथित आशा कार्यकताओं को रकम का लालच देकर मरीजों को अस्पताल भेजने के लिए कहते हैं। सामान्य से लेकर गंभीर जांच तक के मरीजों को भेजने के एवज में कमीशन अलग-अलग मिलता है। अल्ट्रासाउंड के लिए चार सौ लेकर पांच सौ और ब्लड जांच में भी मोटा कमीशन मरीज लाने के एवज में दिए जाते हैं।

ओवररेटिंग पर खाद विक्रेता पर एफआईआर

बस्ती। जिले के दुबौलिया थानाक्षेत्र में ओवररेटिंग कर खाद बेचने का मामला सामने आया है। जिला कृषि अधिकारी (उर्वरक निरीक्षक/ अधिसूचित अधिकारी) डॉ. बाबूराम ने तहरीर में बताया कि जांच के दौरान यह सामने आया कि किसान विरेंद्र निवासी प्रतापपुर को विक्रेता ने निर्धारित मूल्य 266.50 रुपये की दर से खाद नहीं दी। बल्कि ओवररेटिंग करके 360 रुपये प्रति बोरी के हिसाब से बिक्री की। रजिस्टर का निरीक्षण करने पर पीओएस मशीन में प्रदर्शित स्टॉक का भौतिक मिलान करने पर यूरिया 10.08 एमटी (224 बोरी) के सापेक्ष 242 बोरी पाया गया। यह मानक से अधिक मिला। उनकी तहरीर पर दुबौलिया थाने में आरोपित अनिल कुमार निवासी केवाड़ी मुस्तहकम दुबौलिया हालमुकाम जय दुर्गे उपभोक्ता सहकारी समिति लिमिटेड चिलमा बाजार दुबौलिया के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर लिया गया है।

मासूम से दुष्कर्म के दोषी को 20 साल का कारावास, 25 हजार अर्थदंड

बस्ती। न्यायालय विशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट विनोद कुमार सप्तम की अदालत ने पांच साल की मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म करने वाले आरोपी प्रकाश चंद्र वर्मा का दोष सिद्ध होने पर 20 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई है। कोर्ट ने 25 हजार रुपये अर्थदंड भी देना होगा। अदालत को एडीजीसी अरविंद कुमार पांडेय ने बताया कि एक महिला ने कलवारी थाना में तहरीर देकर बताया कि 4 जुलाई 2024 को उनकी 5 साल की बेटी पढ़ने के लिए एक स्कूल गई थी। विद्यालय शिक्षक प्रकाश चंद्र वर्मा निवासी सुल्तानपुर थाना कलवारी ने मासूम को गोद में उठाकर खिलाने के बहाने उसके साथ छेड़खानी की, इससे उसके प्राइवेट पार्ट से ब्लड आने लगा। मासूम रोते हुए घर पहुंची और आपबीती बताई। इसके बाद पुलिस को शिकायत दी गई। मासूम के मेडिकल परीक्षण, मजिस्ट्रियल बयान और अन्य गवाहों के बयान के आधार पर विवेचक ने आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल किया। न्यायालय में 17 महीने तक ट्रायल चला। न्यायाधीश ने तथ्यों के आधार पर इसे जघन्य अपराध मानते हुए शिक्षक को दोषी ठहराया।

खाद्यान्न की कालाबाजारी में कोटेदार पर एफआईआर दर्ज

बस्ती। पूर्ति निरीक्षक बस्ती सदर की जांच में खाद्यान्न की कालाबाजारी के मामले में बरसांव के कोटेदार पर एफआईआर दर्ज हुआ है पूर्ति निरीक्षक अशोक कुमार ने तहरीर में बताया है कि गत 29 अक्तूबर और दो नवंबर को आईजीआरएस पर कोटेदार के खिलाफ शिकायत हुई। जिसमें आरोप लगाया गया कि ग्राम पंचायत बरसांव के उचित दर विक्रेता अंगद प्रसाद ने विगत दो माह यानी माह सितंबर व अक्टूबर 2025 में कार्डधारकों से ई-पॉस मशीन पर आधार प्रमाणीकरण कराने के बाद भी उन्हें खाद्यान्न का वितरण नहीं किया। इसकी जांच क्षेत्रीय पूर्ति निरीक्षक बस्ती सदर ने गत 19 नवंबर को गांव में जाकर की। जांच में कुल 19 कार्डधारकों से उनका लिखित बयान प्राप्त किया। इसमें पाया गया कि विक्रेता अंगद प्रसाद ने दो माह से खाद्यान्न नहीं दिया है। दुकान के भौतिक सत्यापन में विक्रेता के गोदाम से 34.11 क्विंटल गेहूं, 61.03 क्विंटल चावल और 0.42 क्विंटल चीनी कम पाया गया। पूर्ति निरीक्षक की जांच रिपोर्ट पर डीएम के आदेश के बाद कोतवाली में एफआईआर दर्ज कर लिया गया है।

ट्रेन में चेन उड़ाने वाली महिला धराई

पुरानी बस्ती। स्थानीय पुलिस ने विभिन्न भीड़ भाड़ वाले स्थानों से महिलाओं के गले से चेन उड़ाने वाली संदिग्ध महिला को पकड़ लिया है। उसके पास से चोरी का चेन भी बरामद हुआ है। थानाध्यक्ष पुरानी बस्ती जयदीप दुबे ने बताया कि करुआ बाबा दक्षिण दरवाजा से शनिवार की शाम गोरखपुर कोहड़ी-कोहड़ा की कविता नाम की महिला को मय चेन गिरफ्तार किया गया है।

हस्तशिल्पी कलाकारों ने लगाई प्रदर्शनी उत्पाद से भर गया जीआईसी मैदान

बस्ती। जिला खादी तथा ग्रामोद्योग के तत्वावधान में जीआईसी परिसर में शनिवार को मंडल स्तरीय प्रदर्शनी लगाई गई। मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष संजय चौधरी ने फीता काटकर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। इसमें विभिन्न जनपदों के हस्तशिल्पी कलाकारों ने अलग- अलग स्टॉल सजाया है। विभिन्न उत्पाद से मैदान भर गया है। मुख्य अतिथि ने कहा कि इस तरह की प्रदर्शनी से स्थानीय उत्पाद एवं निमार्ता कलाकारों को रोजगार का बेहतर प्लेटफार्म प्राप्त होता है। इससे उत्पाद की बिक्री करके लोग अपनी आय बढ़ा सकते हैं। परिक्षेत्रीय जिला ग्रामोद्योग अधिकारीप्रदर्शनी अध्यक्ष एलबी सिंह ने बताया कि यह प्रदर्शनी 29 दिसंबर तक संचालित रहेगी। प्रदर्शनी में हस्तकला शिल्प से निर्मित आवश्यक सामान आम जनमानस को निर्धारित मूल्य पर उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील किया कि संचालित प्रदर्शनी में आकर हस्त निर्मित उत्पाद की खरीदारी करें। सीडीओ सार्थक अग्रवाल ने कहा कि शासन की मंशा है कि शुद्ध देशी ढंग से निर्मित घरेलू सामानों को बिक्री कर ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार लाया जाए। इसीलिए शासन की तरफ से इस तरह के आयोजनों को प्राथमिकता दी जा रही है। इससे ग्रामीण उद्योग को बढ़ावा मिलेगा। सभी जिला स्तरीय अधिकारी-कर्मचारी इस प्रदर्शनी में अवश्य आए। उपयोगी सामानों की खरीदारी भी करें।

वातानुकूलित तृतीय इकोनॉमी श्रेणी के 07 कोचों सहित कुल 15 कोच लगाये जायेंगे

गोरखपुर,: रेलवे प्रशासन द्वारा प्रयागराज में लगने वाले माघ मेला के अवसर पर श्रद्धालु यात्रियों की होने वाली अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुये 05005/05006 छपरा-झूसी-छपरा माघ मेला आरक्षित विशेष गाड़ी का संचलन छपरा से 01, 02, 03, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 21, 22, 23, 30, 31 जनवरी, 01, 13, 14 एवं 15 फरवरी, 2025 को तथा झूसी से 02, 03, 04, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 22, 23, 24, 31 जनवरी, 01, 02, 14, 15 एवं 16 फरवरी, 2025 को निम्नवत किया जायेगा। 05005 छपरा-झूसी माघ मेला आरक्षित विशेष गाड़ी 01, 02, 03, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 21, 22, 23, 30, 31 जनवरी, 01, 13, 14 एवं 15 फरवरी, 2025 को छपरा से 21.00 बजे प्रस्थान कर सुरेमनपुर से 21.30 बजे, सहतवार से 21.50 बजे, बलिया से 22.15 बजे, चितबड़ागांव से 22.30 बजे, करीमुद्दीनपुर से 22.42 बजे, यूसुफपुर से 23.00 बजे, गाजीपुर सिटी से 23.25 बजे, औंड़िहार से 23.57 बजे, दूसरे दिन वाराणसी सिटी से 01.02 बजे, वाराणसी से 01.20 बजे, बनारस से 01.40 बजे, माधो सिंह से 02.17 बजे तथा ज्ञानपुर रोड से 02.37 बजे छूटकर झूसी 04.00 बजे पहुँचेगी। वापसी यात्रा में 05006 झूसी-छपरा माघ मेला आरक्षित विशेष गाड़ी 02, 03, 04, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 22, 23, 24, 31 जनवरी, 01, 02, 14, 15 एवं 16 फरवरी, 2025 को झूसी से 20.00 बजे प्रस्थान कर ज्ञानपुर रोड से 20.47 बजे, माधो सिंह से 21.07 बजे, बनारस से 22.05 बजे, वाराणसी से 22.25 बजे, वाराणसी सिटी से 22.45 बजे, औंड़िहार से 23.57 बजे, दूसरे दिन गाजीपुर सिटी से 00.35 बजे, यूसुफपुर से 01.02 बजे, करीमुद्दीनपुर से 01.15 बजे, चितबड़ागांव से 01.32 बजे, बलिया से 01.50 बजे, सहतवार से 02.17 बजे तथा सुरेमनपुर से 02.42 बजे छूटकर छपरा 03.45 बजे पहुँचेगी। इस गाड़ी में जेनरेटर सह लगेजयान का 01, एल.एस.एल.आर.डी. के 01, शयनयान श्रेणी के 06 तथा वातानुकूलित तृतीय इकोनॉमी श्रेणी के 07 कोचों सहित कुल 15 कोच लगाये जायेंगे।

साइक्लोथॉन का दृश्य

गोरखपुर,: फिट इंडिया अभियान को गति प्रदान करने के उद्देश्य से पूर्वोत्तर रेलवे क्रीड़ा संघ (नरसा) के तत्त्वावधान में 21 दिसम्बर, 2025 को सैयद मोदी रेलवे स्टेडियम, गोरखपुर में ह्यसंडेज ऑन साइकिलह्य का आयोजन किया गया। इसके माध्यम से ह्यह्यफिटनेस की डोज, आधा घंटा रोजह्यह्य का संदेश दिया गया। साइक्लोथॉन का शुभारम्भ उपाध्यक्ष/नरसा श्री विजय कुमार एवं महासचिव/नरसा श्री पंकज कुमार सिंह की उपस्थिति में एथलेटिक्स कोच श्री विनोद कुमार सिंह से हरी झंडी दिखवाकर किया। इस साइक्लोथॉन में लगभग 05 किमी. की दूरी तय की गई, जो रेलवे स्टेडियम से प्रारम्भ होकर मोहद्दीपुर, पैडलेगंज, रामगढ़ताल के किनारे (सर्कुलर रोड), आर.के.बी.के., महाप्रबन्धक कार्यालय होते हुये पुनः रेलवे स्टेडियम में पहुँचकर समाप्त हुआ। इस आयोजन में मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री रोशन लाल यादव तथा सहायक क्रीड़ाधिकारी श्री चन्द्र विजय सिंह सहित राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कोच, खिलाड़ी, स्थानीय खिलाड़ी तथा कर्मचारियों ने भाग लिया साथ ही फिटनेस को लेकर एक अच्छा संदेश दिया गया। इस अवसर पर महासचिव/नरसा श्री पंकज कुमार सिंह ने कहा कि फिट इंडिया अभियान को गति प्रदान करने के उद्देश्य से ह्यसंडेज ऑन साइकिलह्य एक वर्ष पूर्व शुरू किया गया था, इसके एक वर्ष पूर्ण होने पर यह आयोजन किया गया। इस अभियान का आयोजन कर फिटनेस की डोज, आधा घंटा रोज का संदेश देने का कार्य किया गया। श्री सिंह ने कहा कि आज के समय में फिटनेस सबसे बड़ी चुनौती है, जो नियमित रूप से साइकिल चलाकर पाया जा सकता है। नियमित रूप से साइकिल चलाकर हम अपने फिटनेस को बनाये रख सकते हैं। सहायक क्रीड़ाधिकारी श्री चन्द्र विजय सिंह ने इस साइक्लोथॉन में अधिक से अधिक खिलाड़ियों को भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया।

चीख में बदली किलकारी पिता ने चार साल के मासूम को जमीन पर पटका मौत

भदोही। भदोही जिले में दर्दनाक घटना से पुलिस भी हैरान हो गई। पिता ने नशे की हालत में पहले पत्नी और परिवार के लोगों से विवाद किया। इसके बाद अपने बेटे को जमीन पर पटक दिया। उसे गंभीर चोट लगी थी। सुरियावां थानाक्षेत्र के गुआली गांव में शनिवार की देर रात दिल दहलाने वाली घटना सामने आई। नशेड़ी पिता ने अपने चार वर्षीय बेटे की बेरहमी से जान ले लिया। घर वालों से मामूली विवाद के बाद उसने बेटे को जमीन पर पटक दिया। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। अस्पताल में उपचार के दौरान रविवार को उसकी मौत हो गई। पुलिस ने आरोपी पिता पर प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया। ग्रामीणों के मुताबिक, शनिवार रात करीब 11:30 बजे गुवाली गांव निवासी रामजी वनवासी शराब के नशे में घर पहुंचा। इसके बाद उसने पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों से किसी बात को लेकर विवाद शुरू कर दिया। विवाद इतना बढ़ गया कि गुस्से में आकर रामजी ने अपने चार वर्षीय बेटे विकास वनवासी को गोद में उठाया और जोर से जमीन पर पटक दिया। इस दौरान मासूम विकास को गंभीर चोटें आईं। घटना के बाद घर में चीख-पुकार मच गई। परिजन आनन-फानन में बच्चे को लेकर अस्पताल पहुंचे, जहां उसकी हालत नाजुक बनी रही। परिजनों में मचा कोहराम इलाज के दौरान रविवार सुबह विकास की मौत हो गई।

सीएम के निर्देश पर सड़क पर उतरे अफसर फर्जी विधायक पास वाली कार सीज

कानपुर। मुख्यमंत्री के निर्देश पर कानपुर डीएम और डीसीपी ट्रैफिक ने गंगा बैराज पर सघन चेकिंग की, जिसमें शराब पीकर गाड़ी चला रहे फर्जी विधायक पास लगी इनोवा समेत दो गाड़ियां सीज की गईं। कानपुर में कोहरे के बीच बढ़ते सड़क हादसों को लेकर सीएम योगी आदित्यनाथ के कड़े निदेर्शों के तुरंत बाद प्रशासन एक्शन मोड में दिखा। शनिवार शाम डीएम जितेंद्र प्रताप सिंह के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा पर सख्त चेकिंग अभियान चलाया गया। गंगा बैराज पर विधानसभा सचिवालय का संदिग्ध पास लगी इनोवा कार पकड़ी गई। जांच में कार चला रहा व्यक्ति शराब के नशे में धुत मिला। ब्रीथ एनालाइजर टेस्ट में पुष्टि होते ही कार को नवाबगंज थाने में सीज कर दिया गया। चौंकाने वाली बात यह रही कि कार पर विधायक का पास लगा था जो पूछताछ में फर्जी निकला। डीएम और डीसीपी ट्रैफिक रविंद्र कुमार की संयुक्त चेकिंग में एक स्विफ्ट कार चालक भी शराब पीकर गाड़ी चलाते पकड़ा गया। उसके वाहन को भी सीज किया गया।

युवती का कूचा हुआ था सिर पास में पड़ा था चप्पल-खिलौना

वाराणसी। युवती की लाश के आसपास खून बिखरे हुए थे। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। खबर लिखे जाने तक उसकी पहचान नहीं हो पाई थी। युवती यहां कैसे पहुंची, इसकी भी जांच की जा रही है। चोलापुर थाना क्षेत्र के कथोर व रामपुर (मदनवीर के सरहद के गांव) में 28 वर्षीय एक महिला का गला दबाने के बाद ईंट से सिर कूच कर हत्या किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। महिला शादीशुदा बताई जा रही है। घटना को लेकर गांव में सनसनी फैली हुई थी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर फॉरेंसिक टीम की मदद से जांच में जुट गई थी। जासूसी कुतिया भी घटनास्थल से 100 मीटर दूर नियार-दानगंज मार्ग के समीप तक गई। इसके बाद लौट आई। यह माना जा रहा है कि हत्या करने वाले व्यक्ति ने इसी रास्ते का प्रयोग किया होगा। घटनास्थल पर एडीसीपी नीतू कात्यायन, एसीपी सारनाथ विदुष सक्सेना पहुंचे थे। पुलिस ने की कार्रवाई चोलापुर थाना क्षेत्र की कैथोर गांव में एक बगीचे में सुनसान जगह पर 28 वर्षीय एक महिला का सिर ईंट से कूचकर हत्या की गई है। हत्या के बाद हत्यारे ने शव को कुछ दूर पर बाजरे के सुखे लकड़े के ढेर में छुपा कर रख दिया। बगीचे में जमीन पर खून इधर-उधर बिखरे पड़े थे। घटना दो दिन पुरानी बताई जा रही है। रामपुर का रहने वाला सोनू यादव रविवार को सुबह जब बगीचे में अपने लकड़े को लेने के लिए पहुंचा तो वहां पर पहले महिला का पैर फिर कपड़े दिखाई दिए। सोनू मूक बधिर है। उसने अपनी भाषा शैली में बुलाना चाहा, लेकिन लोगों को समझा में नहीं आया। हाथ पकड़कर लोगों को ले गया सोनू सोनू ने कुछ लोगों को हाथ पकड़ ले जाकर दिखाया, तब मामला सामने आया। मौके पर चोलापुर पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की जांच की। मौके पर एडीसीपी नीतू कात्यायन ने पहुंचकर अधीनस्थों को बताया कि सीमा से सटे थाना क्षेत्र यानी गाजीपुर और जौनपुर के थानों से गुमशुदगी दर्ज महिलाओं की तलाश की जाए। सभी बिंदुओं पर जांच होनी चाहिए। इस मामले में खुलासा भी जल्द होना है। मौके से महिला के चप्पल-ईंट एक खिलौना पुलिस ने बरामद किया। स्थानीय लोगों की मानें तो दुष्कर्म करने के बाद महिला का पहले गले दबाया गया, फिर उसकी हत्या की गई। जल्द होगा खुलासाः एसीपी सारनाथ विदुष सक्सेना ने बताया कि महिला के हाथ पर जीपी और पीएल का टैटू बना है। महिला साड़ी पहने थी। उसने स्वेटर भी पहन रखी थी। पैर में मौजे थे। महिला की पहचान नहीं हो पाई है। शव के गले में एक मफलर भी बरामद हुआ है।

ठिठुरते बुजुर्गों के लिए फरिश्ता बना सिपाही चाय पिलाई कंबल बांटे

कानपुर। मंधना चौकी के सिपाही जहान सिंह ने फ्लाईओवर के नीचे ठंड से ठिठुर रहे बुजुर्गों को पहले चाय पिलाई। फिर खुद के खर्च पर कंबल और आर्थिक मदद देकर इंसानियत पेश की। कानपुर में कड़ाके की ठंड और कोहरे का असर जारी है और लोग घरों में दुबके हैं। ऐसे समय में कानपुर पुलिस का एक मानवीय चेहरा सामने आया है। बिठूर थाने की मंधना चौकी पर तैनात सिपाही जहान सिंह ने ड्यूटी के साथ-साथ इंसानियत की जो मिसाल पेश की है। उसकी हर तरफ चर्चा हो रही है। रविवार को जब पारा काफी नीचे गिर गया, तब सिपाही जहान सिंह की नजर जीटी रोड फ्लाईओवर के नीचे ठिठुर रहे बुजुर्गों पर पड़ी। बुजुर्गों को ठंड से कांपता देख सिपाही ने सबसे पहले उनके लिए गरम चाय का इंतजाम किया। कंबल देने के बाद आर्थिक मदद भी की बुजुर्गों के पास ठंड से बचने का कोई साधन नहीं था। सिपाही जहान सिंह ने अपनी जेब से पैसे खर्च किए, मंधना बाजार गए और वहां से कंबल खरीदकर बुजुर्गों को ओढ़ाए। कंबल देने के बाद सिपाही ने बुजुर्गों को नकद आर्थिक मदद भी दी, ताकि वे अपने भोजन का प्रबंध कर सकें। लोगों ने कहा- रियल हीरो मंधना चौकी के सामने हुई इस घटना को जिस किसी ने देखा, उसने सिपाही के जज्बे को सलाम किया। स्थानीय लोगों का कहना है कि पुलिस का यह रूप समाज में विश्वास पैदा करता है। सोशल मीडिया पर भी सिपाही जहान सिंह की गुड पुलिसिंग की जमकर सराहना हो रही है।

वनडे विश्वकप की ऐतिहासिक सफलता के बाद टी20 की तैयारी

विशाखापत्तनम। वनडे विश्व कप में जीत के बाद भारतीय महिला टीम श्रीलंका के खिलाफ पांच मैचों की टी20 सीरीज से टी20 विश्व कप की तैयारियों की शुरूआत करेगी। इस दौरान टीम प्रबंधन अनुभवी खिलाड़ियों के साथ-साथ युवा खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर खास नजर रखेगा। वनडे विश्व कप में ऐतिहासिक जीत के बाद भारतीय महिला टीम रविवार से श्रीलंका के खिलाफ शुरू हो रही पांच मैचों की टी20 सीरीज के साथ अगले साल होने वाले टी20 विश्व कप की तैयारियों का औपचारिक आगाज करेगी। इस सीरीज में टीम प्रबंधन का फोकस जहां अनुभवी खिलाड़ियों की लय पर होगा। वहीं, भविष्य को ध्यान में रखते हुए युवा खिलाड़ियों को परखने का भी यह अहम मौका साबित होगी। वनडे विश्वकप जीत के बाद भारत की पहली सीरीज वनडे विश्व कप की सफलता के बाद यह भारतीय महिला टीम की पहली अंतरराष्ट्रीय सीरीज है।

बिना गृहिणी के शानदार भवन भी घर नहीं कहलाता: त्रिपाठी

■ ग्वालियर

जिस स्थान में पत्नी होती है वह स्थान घर कहा जाता है। बिना गृहिणी के शानदार भवन भी घर नहीं कहलाता है। दंपत्ति यदि वट वृक्ष के नीचे भी रहते हों तो वट वृक्ष की छाया ही घर कहलाती है। पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक होते हैं, इन्हें अलग नहीं किया जा सकता। इसलिए हिंदी एवं संस्कृत साहित्य में 'तलाक' शब्द का अर्थ बोध कराने वाला कोई पर्यायवाची शब्द ही नहीं है क्योंकि भारतीय प्राचीन संस्कृति सभ्यता में कभी तलाक को जानते ही नहीं थे। यह विचार पं. राम कृपाल त्रिपाठी गुरुजी ने शनिवार को श्री द्वारकाधीश मंदिर थाटीपुर में आयोजित श्रीमद् भागवत के दौरान धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। इस मौके पर पूतना वध का वर्णन किया गया। कथा का समापन गिरिराज पूजन से हुआ। शनिवार की कथा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्य क्षेत्र के क्षेत्र कार्यकारिणी सदस्य यशवंत इंदापुरकर, वरिष्ठ प्रचारक सुरेंद्र तिवारी, राज्य सूचना आयुक्त डॉ. उमाशंकर पचौरी, पूर्व विधायक मुन्नालाल गोयल, पूर्व भाजपा अध्यक्ष अभय चौधरी, भारत शास्त्री, उद्योगपति अशोक निगम, सत्य कुमार मिश्रा, मनीष श्रीवास्तव, श्याम सुंदर श्रीवास्तव, संजय चौहान, सुरेश पाठक, शैलेश कुशवाह, अतुल पांडेय सहित भागवत प्रेमी उपस्थित रहे।

'विशेष ध्यान' कार्यक्रम आज

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विशेष ध्यान कार्यक्रम का आयोजन 21 दिसंबर रविवार को प्रातः 8:30 से 10 बजे तक अम्मा महाराज की छत्री कटोराताल पर होगा। यह जानकारी ब्रह्माकुमारीज के बीके प्रहलाद ने दी।

ज्योति कलश यात्रा का स्वागत हुआ

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के निर्देशन में शनिवार को ज्योति कलश यात्रा निकाली गई जिसका ग्राम पंचायत सिमरिया में स्वागत किया गया। इस मौके पर सुप्रिया गजेंद्र सिंह, पदम सिंह, शिव वीर सिंह चौहान आदि उपस्थित रहे। प्रवक्ता लाल बहादुर सिंह ने बताया कि रविवार को ग्राम भयपुरा में कलश यात्रा निकाली जाएगी।

आज निकलेगी बालाजी महाराज की शोभायात्रा

श्री बालाजी दरबार सेवा समिति मुरार के तत्वावधान में बालाजी दरबार के 32 वर्ष पूर्ण होने पर घासमंडी मुरार में तीन दिवसीय कार्यक्रम होने जा रहा है। महंत राजेन्द्र दास महाराज ने बताया कि 21 दिसम्बर रविवार को दोपहर दो बजे से श्री बालाजी महाराज की शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसी क्रम में 22 को महापूजा एवं हवन और 23 को भण्डारे का आयोजन किया जाएगा।

950 अग्रबंधुओं ने दी चुनरी साड़ी

अग्रवाल समाज द्वारा नव वर्ष के अवसर पर एक जनवरी को चुनरी शोभा यात्रा निकाली जा रही है। इसी तारतम्य में 950 अग्रबंधु परिवारों ने अपने घर से चुनरी साड़ी दी। मां लक्ष्मी जी की चुनरी शोभायात्रा के लिए थाटीपुर चौराहे से बारादरी तक आमंत्रण पत्रों का वितरण किया गया। इस मौके पर राजेश ऐरन, मुकेश सिंघल, अनिल गर्ग, महेन्द्र अग्रवाल, पूनम अग्रवाल, साधना गोयल, ज्योति बंसल आदि उपस्थित रहे।

'झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं'

सिर्फ मनुष्य ऐसा प्राणी है जो झूठ बोलता है। मंदिर में पूजा करते भी लोग झूठ बोलते हैं। झूठ नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है। यह विचार मुरार मदन मोहन मंदिर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में धर्म सभा को संबोधित करते हुए वल्लभाचार्य महाराज ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि झूठ सिर्फ वहां बोलना चाहिए, जहां किसी के प्राण बच रहे हैं। यदि आपके झूठ से किसी की जान बचती है तो वह झूठ सत्य से भी श्रेष्ठ हो जाता है। उन्होंने कहा कि जिस घर में संत सेवा होती है, वहां एक न एक दिन भगवान जरूर आते हैं। इसलिए कोशिश करते रहना चाहिए कि आपके घर संतों का आगमन होता रहे। इस मौके पर लक्ष्मणदास महाराज, प्रदीप कुमार गांगिल, रजनी राकेश कुमार आदि उपस्थित रहे।

महिला मंडल ने निकाली कलश यात्रा

गायत्री शक्तिपीठ गायत्री नगर तानसेन रोड के तत्वावधान में महिला मंडल बिरला नगर में कलश यात्रा निकाली। जिसमें 51 महिलाएं सिर पर कलश रखकर चलीं। कलश यात्रा में युवा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध पोस्टर लेकर चल रहे थे। शाम को बिरला नगर के कम्यूनिटी हॉल में 1000 दीपकों को प्रज्वलित किया गया। कार्यक्रम संयोजक अन्नपूर्णा सेंगर ने बताया कि 21 दिसंबर रविवार को सुबह 9 बजे 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं निशुल्क संस्कार संपन्न होंगे।

संत महिपतिनाथ का पुण्यतिथि उत्सव 29 से

ढोलीबुआ लोक न्यास द्वारा राजयोगी संत सद्गुरु महिपतिनाथ ढोलीबुआ महाराज का 202वा पुण्यतिथि महोत्सव ढोलीबुआ मठ खासगी बाजार में 29 दिसंबर से 4 जनवरी तक मनाया जाएगा। मठ के प्रवक्ता निशिकांत सुरंगे ने बताया कि 29 से 31 तक प्रतिदिन शाम 6 बजे सच्चीदानंद नाथ ढोलीबुआ महाराज सद्गुरु महिपतिनाथ के जीवन चरित्र का वर्णन करेंगे। श्री सुरंगे ने बताया कि 1 जनवरी को अभिषेक, श्रृंगार, हरि कथा और पालकी निकाली जाएगी। इसी क्रम में 2 को गोपाल काला कीर्तन और सत्य नारायण पूजा और 4 को गायन व प्रसाद वितरण होगा।

आज सबसे छोटा दिन और रात होगी सबसे बड़ी

■ ग्वालियर

हिन्दू पंचांग के अनुसार आज रविवार को सबसे छोटा दिन और रात सबसे बड़ी होगी। ज्योतिषाचार्य डॉ. हुकुमचंद जैन ने बताया कि ग्वालियर में दिन 10 घंटे 27 मिनट का और रात्रि 13 घंटे 33 मिनट की होगी। भोपाल में दिन 10 घंटे 40 मिनट का और रात्रि 13 घंटे 20 मिनट की होगी। उज्जैन में दिन 10 घंटे 40 मिनट और रात्रि 13 घंटे 20 मिनट की होगी। ज्योतिषाचार्य ने बताया कि इस दिन से सूर्य का दक्षिणायन से उत्तरायण की तरफ मुड़ना शुरू होता है। सूर्य धीरे- धीरे उत्तर की तरफ बढ़ता है इसी को उत्तरायण की शुरुआत कहते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले दिन देवताओं के दिन कहलाते हैं। इनमें शुभ कार्य जैसे विवाह, नवीन गृह प्रवेश, देव प्रतिष्ठा, प्रमुख संस्कार आदि शुभ कार्य के मुहूर्त बनते हैं। ज्योतिषाचार्य ने बताया कि सूर्य की गति प्रत्यक्ष रूप से दक्षिण दिशा में सबसे अधिक झुक जाती है तब पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं, इस कारण इस दिन का मान सबसे कम और रात्रि मान सबसे ज्यादा रहता है।

दुकानों के नाम चितेरा पेंटिंग से लिखे जाएं: कटारे

ग्वालियर। इंटेक ग्वालियर चैप्टर द्वारा 5 दिवसीय चितेरा पेंटिंग पर आधारित कार्यशाला का समापन शनिवार को हुआ। इसका उद्देश्य लोककला चितेरा पेंटिंग को संरक्षित करना तथा नई पीढ़ी तक इसको पहुंचाना रहा। कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश पर्यटन निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक नितिन कटारे थे। कार्यशाला को संबोधित करते हुए श्री कटारे ने कहा कि चितेरा जैसी लोककलाओं को जीवंत बनाए रखने के लिए इस प्रकार के आयोजन आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि ग्वालियर का मेला एवं सार्वजनिक आयोजनों में दुकानों और स्टॉल्स के नाम चितेरा पेंटिंग से लिखे जाएं। जिससे न केवल शहर की सांस्कृतिक पहचान बढ़ेगी बल्कि आमजन में इस कला के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। आभार अश्विनी कुरूप ने व्यक्त किया। इस अवसर पर नीलकमल माहेश्वरी, राजीव तोमर, विकास सिंह तथा चंद्रदीप सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सलूजा भोपाल स्थानांतरित

■ ग्वालियर

लगातार शिकायतें मिलने के बाद क्षेत्रीय परिवहन विभाग के शीघ्र लेखक द्वितीय मनीष सलूजा को भोपाल वल्लभ भवन स्थानांतरित कर दिया गया है। यह आदेश 16 दिसंबर को मध्यप्रदेश शासन परिवहन विभाग की अवर सचिव आयुषी जैन द्वारा जारी किया गया।

अंतरराष्ट्रीय शोध, साइबर अपराध और एआई पर गहन विमर्श

ट्रिपल आईटीएम में तकनीकी सत्रों और समापन समारोह के साथ सम्मेलन संपन्न

■ ग्वालियर

अटल बिहारी वाजपेयी-भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान में आयोजित आईईईई इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन रिसेंट एडवांसेज इन कंप्यूटिंग एंड सिस्टम्स का दूसरा दिन शनिवार को तकनीकी सत्रों और समापन समारोह के साथ संपन्न हुआ। दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग द्वारा किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और उद्योग विशेषज्ञों की सक्रिय भागीदारी रही।

दूसरे दिन समानांतर शोध पत्र प्रस्तुति सत्रों के साथ तीन प्रमुख कार्यक्रम आयोजित किए गए। सम्मेलन में भारत सहित जापान, अमेरिका, तंजानिया, इंडोनेशिया और बांग्लादेश के शोधकर्ताओं ने भाग लिया। दोनों दिनों में कुल लगभग 170 शोध पत्रों की प्रस्तुति की गई। पहला प्रमुख सत्र उभरते साइबर अपराध और भविष्य की चुनौतियां विषय पर आयोजित हुआ, जिसमें केंद्रीय जासूसी प्रशिक्षण संस्थान, चंडीगढ़ के फैकल्टी सदस्य गुरुचरण सिंह ने साइबर फॉरेंसिक्स, डिजिटल जांच, यूएफईडी टूल्स, सीईआईआर पोर्टल एवं संचार साथी एप पर विस्तृत जानकारी दी। इस सत्र में प्रो. के. वी. आर्य, डॉ. विनोद कुमार जैन एवं डॉ. डब्ल्यू. वेलफ्रेड गॉडफ्रे उपस्थित रहे।

दूसरा प्रमुख कीनोट व्याख्यान कार्यस्थल पर जेनरेटिव एआई विषय पर उबर के इंजीनियरिंग मैनेजर दिप्तिमान पुरबे ने दिया। उन्होंने एआई आधारित ऑन-कैंपस फूड डिलीवरी एप, चैटजीपीटी, जेमिनी, गिटहब कोपायलट जैसे टूल्स के उपयोग पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डॉ. विवेक तिवारी, डॉ. सौम्या भदौरिया एवं डॉ. डब्ल्यू. वेलफ्रेड गॉडफ्रे उपस्थित रहे। सम्मेलन का समापन सत्र प्रो. एस. एन. सिंह, निदेशक एबीवी-आईआईआईटीएम की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन प्रतिवेदन डॉ. विनोद कुमार जैन ने प्रस्तुत किया ।

हिन्दू सम्मेलन के लिए हुआ भूमि पूजन, समिति की घोषणा

ग्वालियर। गरगज नगर स्थित लक्ष्मीपुरम बस्ती में शनिवार को समरस एवं संगठन हिन्दू समाज निर्माण के उद्देश्य को लेकर हिन्दू सम्मेलन हेतु भूमि पूजन किया गया। इस अवसर पर गरगज नगर के संघ चालक मानसिंह जादौन ने 31 दिसंबर 2025 को होने वाले सकल हिन्दू सम्मेलन की रूप रेखा प्रस्तुत की। उन्होंने सम्मेलन की तैयारियों के लिए गठित समिति की घोषणा की। इस समिति में संरक्षक मण्डल उपाध्यक्ष सुभाष गर्ग, प्रभारी नवल किशोर गौड एवं सतीश गुप्ता, अध्यक्ष परशुराम चौरसिया, उपाध्यक्ष महेशचन्द्र मंगल एवं अर्चना शर्मा, सचिव पारस बघेल, सह सचिव राजकुमार गुप्ता एवं राधा गुप्ता, कोषाध्यक्ष रामवीर धाकड़, सह कोषाध्यक्ष सुरेश शर्मा एवं दीपक तिवारी के नामों की घोषणा की गई।

अचलेश्वर न्यास कराएगा 24वां सामूहिक विवाह

ग्वालियर, न.सं.। श्री अचलेश्वर महादेव सार्वजनिक न्यास द्वारा 23 जनवरी 2026 को बसंत पंचमी के अवसर पर 24वां सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया जाएगा। न्यास के व्यवस्थापक राजेश पाराशर ने बताया कि पांच वर्ष बाद सामूहिक विवाह समारोह किया जा रहा है। इसमें कमजोर वर्ग और दिव्यांग कन्याओं का विवाह कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि समारोह में शामिल होने के लिए न्यास कार्यालय से फार्म प्राप्त किए जा सकते हैं।

बैटरी कारोबारी पर तीसरे दिन भी चली कार्रवाई, महत्वपूर्ण दस्तावेज जब्त

■ ग्वालियर

बैटरी व स्क्रैप बैटरी का कारोबार करने वाले गुप्ता परिवार पर स्टेट जीएसटी (राज्यकर विभाग) की कार्रवाई तीसरे दिन शनिवार को भी जारी रही। इस कार्रवाई में विभाग के 20 लोगों की टीम शामिल रही, जिसने महत्वपूर्ण दस्तावेज जब्त किए हैं। जिसमें बड़ी कर चोरी उजागर होने की संभावना है। विभाग की यह कार्रवाई संभाग एक के अधिकारी के नेतृत्व में हुई है। उल्लेखनीय है कि बैटरी कारोबारी का दिल्ली में इलाज चल रहा था। शनिवार को जब वह लौटकर आए तो आगे की कार्रवाई की गई। उसके बाद कागजातों की जांच पड़ताल हुई। गत दिवस द्वारका प्रसाद गुप्ता, भोला गुप्ता व उनके साझेदार राजू गुप्ता के घर व उनकी फर्मों आरके इण्डस्ट्रीज, क्रिप्टा पावर, शिवशक्ति इण्डस्ट्रीज, विनायक इण्डस्ट्रीज आदि पर पर कार्रवाई की गई। कागजों को खंगालने पर इनपुट क्रेडिट टैक्स के अधार पर जीएसटी विभाग को करोड़ों का चूना लगाया जा रहा था। जिसमें बड़ी कर चोरी होने की संभावना है। जानकारी के अनुसार टीकमगढ़ की दो-तीन फर्मों के नाम से करीब 50 लाख रुपए की आईटीसी ली गई थी। विभागीय अधिकारियों ने बताया है कि अभी हमारी कार्यवाही आगे भी जारी रहेगी क्योंकि टीम द्वारा जब्त कागजों की स्क्रूटनी की जा रही है।

दयालुता की मिशाल : जीविवि के प्राध्यापक और अधिकारी रात में बांट रहे कंबल

■ ग्वालियर

जीवाजी विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारियों ने सर्दी के मौसम में निराश्रितों की मदद के लिए एक अभियान चलाया है। यह अभियान एक-दूसरे से अच्छे कार्यों के साथ जुड़ने की भावना के तहत किया जा रहा है। इसमें प्राध्यापक और अधिकारियों ने मिलकर रुपए इकट्ठे किए, कंबल खरीदे और इसके बाद यह लोग रात में टोली बनाकर कंबल बांटने निकलते हैं।

उल्लेखनीय है कि कोरोनाकाल में लॉकडाउन के समय भी प्राध्यापक और अधिकारियों ने एक ऐसी ही पहल की थी और लोगों तक खाद्य पदार्थ पहुंचाए थे। इसके बाद अब यह दूसरा प्रयास है।

दरअसल इस संबंध में कुलगुरु प्रो. राजकुमार आचार्य ने सर्दियों में कंबल बांटने का काम करने की इच्छा व्यक्त की थी। कुलगुरु की इस इच्छा पर अधिकारी कर्मचारी इकट्ठे हुए। कुलगुरु सहित अन्य लोगों ने इस काम में अपना-अपना योगदान दिया और अब तक 475 कंबल खरीदे और इन्हें बांटने का काम शुरू कर दिया। शिक्षक और अधिकारी रात में कंबल लेकर निकलते हैं और उन्हें निराश्रितों को बांटना शुरू कर देते हैं।

चायनीज मांझे पर लगाया प्रतिबंध

ग्वालियर। मकर संक्रांति एवं पतंग महोत्सव आदि आयोजनों पर होने वाली पतंगबाजी में चायनीज मांझे के उपयोग पर जिलाधीश रुचिका चौहान ने प्रतिबंध लगा दिया है। चायनीज मांझे की बिक्री एवं भण्डारण पूर्णतः प्रतिबंधित किया गया है। जिलाधीश द्वारा शनिवार को जारी आदेश में स्पष्ट किया गया है कि चायनीज मांझे से पंक्षियों, पशुओं एवं आमजनों की जान का खतरा होता है। चायनीज मांझे को बनाने में नायलॉन, चीनी और कपास के मिश्रण का उपयोग किया जाता है जो कि हानिकारक है। इस मांझे की जद में आने वाले पंक्षियों के पंख कट जाते हैं। जिलाधीश ने चायनीज मांझे की जगह भारतीय मांझे का उपयोग करने की सलाह दी है।

भाइयों ने पड़ोसी के घर पथराव कर तोड़ी गाड़ियां

ग्वालियर। दबंग भाइयों ने पड़ोसी को पुरानी रंजिश के चलते जमकर पीटा और उत्पात मचाते हुए घर पर पथराव कर गाड़ियों की तोड़फोड़ कर डाली। पीड़ित के साथ पहले भी आरोपी भाई मारपीट कर चुके हैं। हमलावरों की करतूत सीसीटीवी में कैद हो गई है। पीड़ित ने पुलिस से हमलावरों की शिकायत की है। जनकगंज थाना क्षेत्र स्थित गेंडे वाली सड़क निवासी रवि प्रजापति, बस चालक है। रवि के पड़ोसी कल्लू ,खान अमन खान और मन्नत खान तीनों भाई हैं और बिना कारण के उसकी मारपीट करते रहते हैं। पुरानी रंजिश के चलते तीनों भाइयों ने एक बार फिर एक राय होकर रवि के घर हमला कर दिया। विरोध करने पर उसकी लात-घूसों से मारपीट करना शुरू कर दी। बताया गया है कि हमलावरों ने रवि की दो गाड़ियों को पहले जमीन पर गिराया, फिर सरियों और पत्थरों से उन्हें तोड़ना शुरू कर दिया। तीनों दबंग भाईयों के आतंक से रवि का परिवार भयभीत हो गया और उन्होंने अपने को घर में कैद कर लिया। हमलावरों की करतूत सीसीटीवी में कैद हो गई। पीड़ित थाने पहुंचा और पुलिस को घटना के बारे में बताया। पुलिस ने फरियादी की शिकायत पर तीनों हमलावरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली है।

गौरव बने सबसे तेज धावक

ग्वालियर। औद्योगिक क्षेत्र मालनपुर स्थित सूर्या रोशनी लिमिटेड ने खेल जगत में अपनी सफलता का परचम लहराया है। मध्य प्रदेश श्रम कल्याण मंडल द्वारा नरसिंहपुर में आयोजित राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में सूर्या रोशनी लिमिटेड संस्थान में कार्यरत गौरव शर्मा ने अपनी असाधारण गति का परिचय देते हुए 100 मीटर, 200 मीटर और 400 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस ऐतिहासिक जीत के साथ उन्हें 'मध्य प्रदेश के सबसे तेज धावक' होने का गौरवपूर्ण सम्मान प्राप्त हुआ है।

विनय नगर में धंसी कार, बहोड़ापुर में डंपर पलटने से हुई थी बुजुर्ग की मौत

भराव की लापरवाही बन रही जानलेवा, दो दिन में दो हादसे

■ ग्वालियर

शहर में अमृत योजना और सीवर लाइन के काम के बाद की जा रही लापरवाही अब जानलेवा साबित होने लगी है। भराव कार्य में गीली और ढीली मिट्टी का इस्तेमाल लगातार हादसों को जन्म दे रहा है। बीते दो दिनों में ऐसे ही दो गंभीर घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें एक बुजुर्ग की जान चली गई, जबकि दूसरी घटना में बड़ा हादसा होते-होते टल गया।

शनिवार को वार्ड 4 के विनय नगर सेक्टर-4 में सीवर लाइन बिछाने के बाद खोदी गई मिट्टी से ही भराव कर दिया गया था। जैसे ही एक कार यहां से गुजरी, वैसे ही सड़क के नीचे की ढीली मिट्टी धंस गई और कार फंसती चली गई। कुछ देर तक इलाके में अफरा-तफरी का माहौल रहा। बाद में दूसरे वाहन की मदद से कार को बाहर निकाला जा सका। गनीमत रही कि इस हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई।

इससे एक दिन पहले बहोड़ापुर क्षेत्र की अर्बन ग्रीन सिटी में इससे भी बड़ा और दर्दनाक हादसा सामने आया था। यहां अमृत योजना के तहत पानी की लाइन बिछाने के बाद गीली मिट्टी से भराव कर दिया गया था। जब गिट्टी से भरा एक भारी डंपर इस मार्ग से गुजरा तो वजन के दबाव में मिट्टी धंस गई और डंपर एक तरफ पलट गया। डंपर जिस ओर गिरा, वहीं 90 वर्षीय बुजुर्ग गिर्राज शर्मा अपने घर के बाहर धूप सेंक रहे थे। डंपर की चपेट में आने से उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

यह हादसा न सिर्फ सिस्टम की लापरवाही को उजागर करता है, बल्कि काम की गुणवत्ता पर भी गंभीर सवाल खड़े करता है। लगातार दो दिन में हुई इन घटनाओं के बाद नगर निगम आयुक्त संघ प्रिय ने सख्त रुख अपनाया है। उन्होंने पीएचई के इंजीनियरों और ठेकेदारों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि लाइन बिछाने के बाद भराव गीली या ढीली मिट्टी से नहीं किया जाएगा। इसके स्थान पर मुरम या बारीक गिट्टी का उपयोग अनिवार्य रूप से किया जाए, ताकि भविष्य में धंसने जैसी घटनाओं को रोका जा सके।

कर्मचारी संघ ने शिक्षकों की मांगों के लिए सौंपा ज्ञापन

ग्वालियर। मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ जिला ग्वालियर द्वारा गत दिवस शिक्षकों की लंबित मांगों के लिए शिक्षा विभाग के संयुक्त संचालक अरविंद सिंह को ज्ञापन सौंपा। संघ के जिला सचिव राजकुमार कौरव ने बताया कि हमारी प्रमुख मांगों में ई-अटेंडेंस के नाम पर शिक्षकों का वेतन रोकना, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षकों को द्वितीय एवं तृतीय क्रमोन्नति देना, सेवानिवृत्त कर्मचारियों का त्वरित भुगतान आदि विषय शामिल हैं। ज्ञापन देने वालो में राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश मंत्री मुरारीलाल शर्मा, जिला अध्यक्ष संजीव शर्मा, संगठन सचिव प्रदीप शर्मा, गिर्राज शर्मा आदि शामिल रहे।

सड़क पर गंदगी फैलाने वालों से वसूला जुर्माना

ग्वालियर। सड़क पर गंदगी फैलाने एवं दुकान पर डस्टबिन न रखने वालों के खिलाफ नगर निगम के स्वास्थ्य अमले द्वारा जुर्माने की कार्रवाई की जा रही है। इस क्रम में शनिवार को स्वास्थ्य अधिकारी किशोर चौहान के निर्देशन में वार्ड 50 व 34 में जुर्माना किया गया, साथ ही वार्ड 55 में स्वच्छता बरकरार रखने के लिए समझाइश दी गई। गंदगी फैलाने वाले दुकानदारों पर कार्रवाई करते हुए पर 3750 रुपए का जुर्माना वसूलने की कार्रवाई की गई। इसके साथ ही चेतावनी दी गई कि भविष्य में साफ-सफाई रखी जाए।

संपादकीय

त्योहारों में सबसे अहम होता है अपनों के साथ होना

मैं उस दिन को नहीं भूल सकता जब मैं बाथरूम से भागता हुआ बाहर चला आया था और मेरी ठुड्डी पर टूथपेस्ट लगा था। क्योंकि मैंने अपनी मां को यह कहते हुए सुना था कि जल्दी ब्रश करके इधर आओ, देखो पापा तुम्हारे लिए क्या लाए हैं। लेकिन मुझे देखते ही मां ने कहा- छी ! पूरे चेहरे पर पेस्ट लगा है। जल्दी जाकर मुंह धोकर आओ। मैंने मां के पल्लू से मुंह पोंछ लिया, टूथब्रश को एक तरफ फेंक दिया और उस उपहार पर झपट पड़ा। लेकिन इस बार पिता ने मुझे रोक दिया और एक ऐसी आवाज में- जिसमें सख्ती थी, लेकिन प्यार भी घुला हुआ था- उन्होंने मुझसे कहा, नहीं पहले मुंह धो लो, फिर आना। हम तब तक इंतजार करेंगे। मैं स्क्रीन पर किसी फिल्म के दृश्य के बदलने से भी तेज गति से लौट आया। संभवतरू लाइफबॉय वालों ने अपना मशहूर स्लोगन बंटी, तेरा साबुन स्लो है क्या? ऐसे ही किसी दृश्य से बनाया होगा।

बचपन की यह याद मेरे मन में तब कौंध गई, जब मैंने अमेरिका के टेक्सास की 49 वर्षीय बेट्सी मोड्रेजेव्स्की के बारे में पढ़ा। उन्हें मिसेज क्लॉज के रूप में प्रदर्शित किया जा रहा है और वे क्रिसमस से पहले अमेरिकी बच्चों में बेहद लोकप्रिय हो चुकी हैं। सफेद नकली फर की किनारी के साथ सैटिन के लाल परिधान में जब बेट्सी चेहरे पर चौड़ी मुस्कान लिए किसी प्राथमिक स्कूल, बड़े रिटेल स्टोर या पुनर्वास केंद्र में प्रवेश करती हैं, तो पृष्ठभूमि में घोषणा होती है- मिसेज क्लॉज आ गई हैं और उनके पास हमारे लिए एक बड़ी खबर है। बच्चे- जिनमें से कुछ उस समय स्टोर के किसी कोने में केक खा रहे होते हैं- वो चेहरों पर लगी क्रीम के साथ ही उनकी ओर दौड़ पड़ते हैं। वे ऐलान करती हैं- बड़ी घोषणा यह है कि तुम सब नाइस लिस्ट में हो और तुम्हें सांता क्लॉज से तोहफा मिलने वाला है। और जब आंखों में चमक लिए कोई मासूम बच्चा उनसे पूछ बैठता है- सांता क्लॉज कहां हैं? तब वे मुस्कराते हुए जवाब देती हैं- वो घर पर आराम कर रहे हैं और क्रिसमस की पूर्व संध्या पर आएंगे। सेंट निक की धर्मपत्नी की बढ़ती लोकप्रियता न केवल इन देशों में महिलाओं को आवाज दे रही है, बल्कि बच्चों के मन में सांता क्लॉज की पारंपरिक कल्पना को भी बदल रही है। उसकी जगह अब क्यूट लगने वाली मां की परिकल्पना उनके मन में उभर रही है। बेट्सी जैसी महिलाओं की लोकप्रियता इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि समाज अब रोजमर्रा की जड़ता से बाहर निकलना चाहता है और मातृत्व के गुणों को सामने लाकर सकारात्मक महिला रोल मॉडलों को भी हमारे सामने रख रहा है। मिसेज क्लॉज बनने के कोई सही या गलत नियम नहीं हैं। एकमात्र नियम यही है कि उन्हें बच्चों से प्रेम होना चाहिए, दिल में क्रिसमस की सच्ची भावना होनी चाहिए और उन्हें ऐसी स्मृतियां रचनी चाहिए, जो जीवन भर हमारे साथ रहें। इसके अलावा वे जैसी चाहें वैसी हो सकती हैं। जहां कई जगहों पर मिसेज क्लॉज अब भी सांता क्लॉज के साथ दिखाई देती हैं, वहीं इस सीजन में बेट्सी जैसी कुछ प्रस्तुतियां पूरी तरह एकल रही हैं। मिसेज क्लॉज अब अधिक सशक्त हैं, वे मैराथन दौड़ती हैं और कई परिवार अपनी बेटियों के लिए इसी तरह के उदाहरण चाहते हैं। यही भावना उत्सवों की आत्मा को दशार्ती है। जहां परंपराएं, भोजन, संगीत उत्सव की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं, वहीं किसी त्योहार का वास्तविक मूल्य साझा अनुभव और मानवीय रिश्तों को मजबूत करने में ही निहित होता है।

एक भयावह त्रासदी की बाकी है कसक

देश में आग लगने की त्रासदियों की लंबी फेहरिस्त है जो क्रम अभी भी जारी है। वजह है जागरूकता की कमी। कारण जानने के बावजूद सबक नहीं लिये जाते। बचाव उपायों पर अमल होना जरूरी है। पीड़ितों के प्रति तंत्र की बेरुखी भी कम नहीं। हालांकि असल जरूरत अग्नि सुरक्षा को बतौर संस्कार अपनाने की है।
डबवाली अग्नि त्रासदी के उस काले दिन से लेकर हाल में गोवा में आग की दुर्घटना तक, हर बार जब किसी बड़े हादसे की खबर सामने आती है, भीतर के जख्म पुनरू ताजा हो उठते हैं। वह 23 दिसंबर 1995 का दिन आज भी स्मृतियों में सुलगता है। जब राजीव मैरिज पैलेस में आयोजित डीएवी स्कूल के भव्य पारितोषिक वितरण समारोह में शॉट सर्किट से विश्व की भयावह अग्नि त्रासदी घटित हुई। चंद मिनटों में 442 लोग काल का ग्रास बन गये। यह सिर्फ आंकड़ा नहीं था, बल्कि डबवाली शहर की लगभग एक प्रतिशत आबादी की बबार्दी थी।

मंडी डबवाली में 23 दिसंबर 1995 को विश्व की भयावह अग्नि त्रासदी घटित हुई थी। ऐसा हर हादसा उस दुर्भाग्यपूर्ण अग्निकांड के जख्म हरे कर देता है।इसमें चंद मिनटों में 442 लोग काल का ग्रास बन गये। जिनमें ज्यादातर

स्कूली बच्चे थे। देश में आग लगने की त्रासदियों की लंबी फेहरिस्त है जो क्रम अभी भी जारी है। वजह है जागरूकता की कमी। कारण जानने के बावजूद सबक नहीं लिये जाते। बचाव उपायों पर अमल होना जरूरी है। पीड़ितों के प्रति तंत्र की बेरुखी भी कम नहीं। हालांकि असल जरूरत अग्नि सुरक्षा को बतौर संस्कार अपनाने की है।

डबवाली अग्नि त्रासदी के उस काले दिन से लेकर हाल में गोवा में आग की दुर्घटना तक, हर बार जब किसी बड़े हादसे की खबर सामने आती है, भीतर के जख्म पुनरू ताजा हो उठते हैं। वह 23 दिसंबर 1995 का दिन आज भी स्मृतियों में सुलगता है। जब राजीव मैरिज पैलेस में आयोजित डीएवी स्कूल के भव्य पारितोषिक वितरण समारोह में शॉट सर्किट से विश्व की भयावह अग्नि त्रासदी घटित हुई। चंद मिनटों में 442 लोग काल का ग्रास बन गये। यह सिर्फ आंकड़ा नहीं था, बल्कि डबवाली शहर की लगभग एक प्रतिशत आबादी की बबार्दी थी। डबवाली का लगभग हर तीसरा परिवार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तौर पर हादसे का पीड़ित हुआ। सैकड़ों परिवार बबार्दी की कगार पर आ गये, दर्जनों घरों को ताले लग गये। यह देश-दुनिया के लिए सबक था, पर सीख किसी ने नहीं ली। तीन दशक बाद भी हालात जस के तस हैं। गोवा अग्निकांड में 23 मौतों की खबर आई, तो लगा जैसे समय ठहर गया हो। वही अफरा-तफरी, वैसा ही आग का तांडव, वैसी ही बेबसी। हर बार वही सवाल उठता है कि हम कब तक लापरवाही की कीमत जानों से चुकाते रहेंगे? डबवाली अग्निकांड के मृतकों में 258 बच्चे, 140 महिलाएं व 44 पुरुष थे, हादसे में कुल 150 लोग घायल हुए व 31 दिव्यांग हो गये। मैं (लेखक) इकबाल सिंह शांत, उस त्रासदी का जीवित दिव्यांग पीड़ित हूं। हादसे की आग में फंसे अपने पिता स्वतंत्रता सेनानी सरदार गुरदेव सिंह शांत को बचाने के लिए अंदर दोबारा दाखिल हुआ व उसी कोशिश में मेरे दोनों हाथ व पीठ गंभीर रूप से झुलस गई। दिव्यांग हो गया, लेकिन तसल्ली है कि पिता को बाहर निकाल लाया था। अफसोस, 25 दिसंबर 1995 को पीजीआई चंडीगढ़ में उनका देहांत हो गया। त्रासदी ने डबवाली से बहुत कुछ छीन लिया। डबवाली अग्नि त्रासदी के बाद मेरिज पैलेसों में आयोजनों की सुरक्षा बढ़ाने, अग्नि सुरक्षा ऑडिट अनिवार्य व आपातकालीन सेवाओं को मजबूत करने के कई नियम-कायदे तो बने। लेकिन गोवा जैसी घटनाएं बताती हैं कि कागज पर बने नियम जमीन पर उतरने से पहले ही दम तोड़ देते हैं। डबवाली अग्निकांड की सीबीआई रिपोर्ट में आग का कारण राजीव मैरिज पैलेस में कार्यक्रम हेतु लगाए दो बिजली कनेक्शन बताए गए थे। बिजली ट्रिपिंग के दौरान जेनरेटर का चेंज-ओवर नहीं बदला गया। पंडाल में लगी पॉलीथिन शीट, बांस व रेशमी कपड़े से आग तेजी से फैली। बिजली निगम, नगर पालिका, पैलेस मालिकों व दो निजी बिजली कर्मचारियों सहित 14 लोगों को दोषी माना गया। पुलिस ने कुछ पर 304-बी के तहत केस दर्ज किया। सीबीआई कोर्ट ने दो-दो साल सजा दी, पर बाद में उन्हें हाईकोर्ट ने बरी कर दिया। जांच में सामने आया कि कार्यक्रम स्थल का नक्शा तक पास नहीं था।मामला सिर्फ डबवाली और गोवा तक सीमित नहीं है, तथ्य खंगालें तो दर्जनों मामले रिकार्ड पर होंगे। देश में 1995 के बाद कई बड़े अग्नि हादसे हुए, जिन्होंने सुरक्षा व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल खड़े किए। 13 जून 1997 को दिल्ली के उपहार सिनेमा में आग दुर्घटना में 59 लोगों की जान गई। सोलह जुलाई, 2004 को तमिलनाडु के कुंभकोणम स्कूल हादसे में 94 बच्चों की दर्दनाक मौत हुई। फरवरी 2010 में कोलकाता के स्टीफन कोर्ट में अग्नि त्रासदी ने 43 लोगों की जिंदगी छीन ली। दिसंबर 2017 में कमला मिल्स (मुंबई) की आग में 14 मौतें हुई। जनवरी 2018 में बवाना औद्योगिक क्षेत्र (दिल्ली) में आग से 17 मजदूरों की जान गई। मई 2019 में सूरत के तक्षशिला कोचिंग सेंटर में आग से 22 छात्रों की मौत हुई। साल 2019 में दिल्ली की अनाज मंडी में आग ने 44 लोगों को लील लिया। साल 2022 में उत्तर प्रदेश के भदोही क्षेत्र में दुर्गा पूजा पंडाल में भीषण आग से पांच मौतें व 68 लोग झुलस गये। अब दिवाली-2025 को अग्नि घटनाओं में दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल व बिहार में 482 से अधिक लोग झुलसे। गुरुग्राम में 29 व गौतम बुद्ध नगर में 26 आग की घटनाएं दर्ज हुई, नोएडा में एक युवक की मौत भी हुई। रौनक में डूबे हम पुराने सबक को भूल जाते हैं और गलतियां दोहराते हैं। इन हादसों के लिए सिर्फ प्रशासन ही जिम्मेवार नहीं है, हम सब भी हैं, जो व्यवस्था व नियमों को धता बताते हुए अग्नि हादसों को बुलावा देते हैं। प्रत्येक अग्नि हादसे में बच जाते हैं, झुलसे हुए चेहरे, जले हुए हाथ-पैरों वाले पीड़ित तो कहीं बेबस मां-बाप या अनाथ बच्चे। मदद के नाम पर बस कुछ लाख का मुआवजा। इंसाफ के लिए अदालतों में तारीख-पर-तारीख। सरकारें तब जागती हैं, जब जिंदगियां राख हो चुकी होती हैं। हर हादसे में उमेश मित्तल, गगनदीप बुट्टर, गीता, सीमा बलाना, सुमन कौशल, विनोद बांसल, रमेश सचदेवा जैसे अनगिनत पीड़ित जीवन भर आग से मिले दुखों को ढोते हैं। उस अग्नि त्रासदी के बाद भी मेरी हिम्मत व सरोकारों में कमी नहीं आयी। पत्रकारिता में सक्रिय हूं। लेकिन विडंबना है कि कभी व्यवस्था व समाज में वांछित चेतना नहीं दिखी। दरअसल जरूरत हमदर्दी की नहीं, बल्कि सुरक्षा को बतौर संस्कार अपनाने की है। स्कूल-कॉलेजों से लेकर गांव-कस्बों तक हर व्यक्ति को अग्नि सुरक्षा की पाठ्यक्रम में शिक्षा अनिवार्य हो। इमारतों, सार्वजनिक स्थानों, विवाह समारोहों, धार्मिक आयोजनों व दुकानों व बाजारों में सुरक्षा मानकों से कोई समझौता न किया जाये। अग्निशमन विभाग आधुनिक उपकरणों व पर्याप्त अमले से लैस हो। वहीं हादसों के जिम्मेदारों पर फास्ट ट्रैक कार्रवाई हो। इस बार 23 दिसंबर 2025 को भी हम सभी अग्नि पीड़ित डबवाली अग्निकांड की 30वीं बरसी मनाएंगे। इस बार गोवा अग्निकांड के 23 मृतकों का दुख भी साथ होगा। बता दें कि 23 दिसंबर को राष्ट्रीय अग्नि सुरक्षा दिवस घोषित करने की मांग अभी अधूरी है । डबवाली स्थित नवनिर्मित राजीव मैरिज पैलेस में 23 दिसंबर 1995 को डीएवी स्कूल का पांचवां वार्षिकोत्सव था। पैलेस का नामकरण चंद्रभान धमीजा के पुत्र राजीव के नाम पर रखा गया। राजीव की अग्नि त्रासदी में मौत हो गयी थी।

वैश्विक अर्थव्यवस्था व्यापार तथा युद्ध में अवलंबित आवश्यकताओं पर निर्भर रिश्ते

स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उन्हें स्वीकृत 500 रुपये की सरकारी पेंशन लेने से भी उन्होंने यह कहकर मना कर दिया था कि उन्होंने आजादी की लड़ाई पेंशन के लिए थोड़े ही लड़ी थी। खुद्दार तो वे इतने थे कि उन्हें अपनी संतानों, परिजनों व शुभचिंतकों से किसी भी रूप में आर्थिक सहायता लेना गवारा नहीं था। सरकार द्वारा घर देने के प्रस्ताव को भी उन्होंने ठुकरा दिया था। उनके पास अपना घर तक नहीं था तो कार या कोई और वाहन होने का सवाल ही नहीं था। इसलिए राजधानी दिल्ली में वे प्रायः बसों से आते-जाते दिखाई देते थे। बाद में उनकी अहमदाबाद वासी बेटी से उनकी दुर्दशा नहीं देखी गई तो वह उन्हें किसी तरह समझा-बुझाकर अपने साथ ले गई। वर्ष 1998 में 15 जनवरी को अपने सौवें जन्मदिन से कुछ महीनों पहले उन्होंने वहीं अंतिम सांस ली। निधन से कोई साल भर पहले 1997 में उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया गया, जबकि पद्मविभूषण से पहले से विभूषित किया जा चुका था। अपने मंत्रिकाल में वे भ्रष्टाचार को लेकर इतने असहिष्णु थे कि भ्रष्टाचारी कितना भी प्रभावशाली या अपना क्यों न हो, उसे बख्शते नहीं थे। एक बार इसी के चलते उन्हें अपना मंत्री पद भी गंवा देना पड़ा था। यह जानना भी दिलचस्प है कि वे जितने बड़े राजनेता, उतने ही अच्छे अर्थशास्त्र के जानकार व लेखक भी थे। उन्होंने कई किताबें तो लिखी ही हैं, श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा और 1947 में इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

संजीव ठाकुर

विश्व आज जिस मोड़ पर खड़ा है वहाँ रिश्तों की भाषा धीरे-धीरे संविदाओं, समझौतों, अनुबंधों और लाभ-हानि के गणित में बदल चुकी है। मानवीय संवेदना, सांस्कृतिक आत्मीयता और नैतिक दायित्वों की जगह सामरिक हितों और व्यापारिक समीकरणों ने ले ली है। वैश्विक व्यवस्था अब मित्र-शत्रु की नहीं बल्कि उपभोक्ता-आपूर्तिकर्ता, निवेशक-बाजार और शक्ति-संतुलन की भाषा में स्वयं को परिभाषित कर रही है, अमेरिका, रूस और चीन जैसे महाशक्तियों से लेकर भारत, यूरोप और सऊदी अरब तक सभी राष्ट्र या तो युद्ध की आशंका से संचालित हैं या व्यापार की अनिवार्यता से, और अक्सर दोनों एक-दूसरे में इस तरह गुंथे हुए हैं कि अलग-अलग पहचानना कठिन हो गया है ।शीत युद्ध के बाद यह आशा की गई थी कि विश्व सहयोग, बहुपक्षीयता और साझा विकास की दिशा में आगे बढ़ेगा किंतु इक्कीसवीं सदी का यथार्थ बताता है कि तकनीक, ऊर्जा, हथियार, दुर्लभ खनिज, खाद्य सुरक्षा और जलवायु जैसे मुद्दे नए प्रकार के संघर्षों को जन्म दे रहे हैं जहाँ युद्ध केवल बंदूकों और मिसाइलों से नहीं बल्कि प्रतिबंधों, टैरिफ, आपूर्ति श्रृंखलाओं के अवरोध, साइबर आक्रमण और सूचना युद्ध से लड़े जा रहे हैं। अमेरिका वैश्विक मुद्रा व्यवस्था, तकनीकी वर्चस्व और सैन्य गठबंधनों के माध्यम से अपनी स्थिति बनाए रखना चाहता है जबकि चीन उत्पादन, निर्यात, आधारभूत ढाँचे और नवाचार के बल पर विश्व बाजार का केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। रूस ऊर्जा संसाधनों और सामरिक शक्ति को अपने प्रभाव का आधार बनाकर पश्चिमी वर्चस्व को चुनौती देता है, यूरोप सुरक्षा के लिए नाटो पर निर्भर रहते हुए भी ऊर्जा, आप्रवासन और आर्थिक मंदी की दुविधाओं से जूझ रहा है, (भारत एक ओर आत्मनिर्भरता और बहुपक्षीय संतुलन की नीति अपनाते हुए वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में विश्वसनीय भागीदार बनना चाहता है तो दूसरी ओर अपनी सीमाओं और सुरक्षा को लेकर सतर्क है)। सऊदी अरब और खाड़ी देश तेल और गैस के माध्यम से वैश्विक राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाते हुए धीरे-धीरे अर्थव्यवस्था के विविधीकरण और तकनीकी निवेश की ओर बढ़ रहे हैं, इन सभी उदाहरणों में एक साझा सूत्र यह है कि रिश्ते स्थायी नहीं रहे, हित स्थायी हो गए हैं, आज कोई देश दूसरे देश का मित्र इसलिए नहीं है कि उसके साथ ऐतिहासिक या सांस्कृतिक निकटता है बल्कि इसलिए है कि उससे उसे ऊर्जा मिलती है, बाजार मिलता है, तकनीक मिलती है या सुरक्षा की गारंटी मिलती है, युद्ध भी अब केवल भूभाग या विचारधारा के लिए नहीं बल्कि संसाधनों, प्रभाव क्षेत्रों और आपूर्ति मार्गों के नियंत्रण के लिए लड़े जा रहे हैं, यूक्रेन संघर्ष ने यह स्पष्ट कर दिया कि एक क्षेत्रीय युद्ध कैसे वैश्विक ऊर्जा कीमतों, खाद्यान्न आपूर्ति और मुद्रास्फीति को प्रभावित कर सकता है, मध्य-पूर्व की अस्थिरता दिखाती है कि तेल, धर्म, भू-राजनीति और हथियार उद्योग कैसे एक-दूसरे को पोषित करते हैं, एशिया-प्रशांत क्षेत्र में तनाव यह संकेत देता है कि तकनीकी श्रेष्ठता और समुद्री मार्गों का नियंत्रण आने वाले समय की सबसे बड़ी रणनीतिक चुनौती है, विज्ञान और तकनीक जो कभी मानव कल्याण के साधन माने जाते थे आज वे भी सामरिक प्रतिस्पर्धा के उपकरण बन गए हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अर्धचालक, अंतरिक्ष तकनीक और जैव-प्रौद्योगिकी पर नियंत्रण अब राष्ट्रों की शक्ति का नया पैमाना है, जो देश इन क्षेत्रों में आगे है वही वैश्विक नियम तय करने की क्षमता रखता है, व्यापार अब केवल वस्तुओं का लेन-देन नहीं रहा बल्कि मूल्यों, मानकों और निर्भरता का निर्माण बन गया है, जब कोई देश किसी दूसरे देश पर तकनीक या कच्चे माल के लिए निर्भर होता है तो उसकी विदेश नीति स्वतः ही सीमित हो जाती है, इसी कारण आत्मनिर्भरता की बातें बढ़ी हैं किंतु पूर्ण आत्मनिर्भरता आज के वैश्विक ताने-बाने में एक भ्रम जैसी प्रतीत होती है, वास्तविकता यह है कि विश्व परस्पर निर्भर है पर यह निर्भरता समान नहीं है, कहीं कोई देश नियम बनाता है तो कहीं कोई देश केवल उनका पालन करता है, इस असमानता ने अविश्वास को जन्म दिया है और अविश्वास ने हथियारों की दौड़, संरक्षणवाद और क्षेत्रीय गठबंधनों को, संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक संस्थाएँ इन जटिलताओं के सामने अक्सर असहाय दिखाई देती हैं क्योंकि उनके निर्णय भी शक्तिशाली देशों के हितों से प्रभावित होते हैं। मानवीय संकट, शरणार्थी समस्या और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दे भी तब तक प्राथमिकता नहीं बन पाते जब तक वे किसी बड़े राष्ट्र के व्यापार या सुरक्षा हितों से सीधे न टकराएँ, इस पूरी स्थिति में आम मनुष्य कहीं हाशिये पर चला गया है।

वीआईपी दर्शन पर सुप्रीम आदेश, निर्णय केंद्र करे

स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उन्हें स्वीकृत 500 रुपये की सरकारी पेंशन लेने से भी उन्होंने यह कहकर मना कर दिया था कि उन्होंने आजादी की लड़ाई पेंशन के लिए थोड़े ही लड़ी थी। खुद्दार तो वे इतने थे कि उन्हें अपनी संतानों, परिजनों व शुभचिंतकों से किसी भी रूप में आर्थिक सहायता लेना गवारा नहीं था। सरकार द्वारा घर देने के प्रस्ताव को भी उन्होंने ठुकरा दिया था। उनके पास अपना घर तक नहीं था तो कार या कोई और वाहन होने का सवाल ही नहीं था। इसलिए राजधानी दिल्ली में वे प्रायः बसों से आते-जाते दिखाई देते थे। बाद में उनकी अहमदाबाद वासी बेटी से उनकी दुर्दशा नहीं देखी गई तो वह उन्हें किसी तरह समझा-बुझाकर अपने साथ ले गई। वर्ष 1998 में 15 जनवरी को अपने सौवें जन्मदिन से कुछ महीनों पहले उन्होंने वहीं अंतिम सांस ली। निधन से कोई साल भर पहले 1997 में उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया गया, जबकि पद्मविभूषण से पहले से विभूषित किया जा चुका था। अपने मंत्रिकाल में वे भ्रष्टाचार को लेकर इतने असहिष्णु थे कि भ्रष्टाचारी कितना भी प्रभावशाली या अपना क्यों न हो, उसे बख्शते नहीं थे। एक बार इसी के चलते उन्हें अपना मंत्री पद भी गंवा देना पड़ा था। यह जानना भी दिलचस्प है कि वे जितने बड़े राजनेता, उतने ही अच्छे अर्थशास्त्र के जानकार व लेखक भी थे। उन्होंने कई किताबें तो लिखी ही हैं, श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा और 1947 में इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

ये एक जगह नही है, श्रद्धालु को इस समस्या से अधिकांश जगह रूबरू होना पड़ता है। जगहझ्रजगह मंदिरों में इस समस्या का सामना होता है। लगभग 40 साल पहले हम कोलकत्ता गए। कालिका जी मंदिर में हम श्रद्धालुओं की लाइन में लगे थे कि हमारे एक साथी ने देखा और हमें इशारा कर अपने पास बुला लिया। सुप्रीम कोर्ट ने मंदिरों में 'वीआईपी दर्शन' सुविधा को चुनौती देने वाली याचिका भले ही खारिज कर दी, किंतु इस याचिका पर कोर्ट द्वारा कही गई बातों की गूंज दूर तक जाएगी। यह गूंज केंद्र सरकार को विवश करेगी कि वह मंदिरों में हाने वाले वीवीआईपी दर्शन पर रोक लगाने वाला निर्णय लें। कोर्ट की ये गूंज आने वाले समय में मंदिरों के वीवीआईपी दर्शन कर रोक लगाने का रास्ता प्रशस्त करेगी। पूर्व मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि यह एक नीतिगत मामला है। इस पर केंद्र सरकार को विचार करना होगा। बेंच ने यह भी कहा कि वीआईपी के लिए ऐसा विशेष व्यवहार मनमाना है। यह याचिका मंदिरों की तरफ से वसूले जाने वाले वीआईपी दर्शन शुल्क को समाप्त करने की मांग कर रही थी। पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि बेंच इस मुद्दे से सहमत है, लेकिन अनुच्छेद 32 के तहत निर्देश जारी नहीं कर सकती। उन्होंने कहा, 'हालांकि हमारी राय है कि मंदिरों में प्रवेश के संबंध में कोई विशेष व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन हमें नहीं लगता कि यह अनुच्छेद 32 के तहत अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने का उपयुक्त मामला है।' यह आदेश में दर्ज किया गया लेकिन मामला सरकार के विचार के लिए छोड़ दिया गया। पूर्व उखककखन्ना ने कहा कि यह मामला कानून-व्यवस्था का प्रतीत होता है और याचिका इस पहलू पर होनी चाहिए थी। बेंच ने कहा, 'हम स्पष्ट करते हैं कि याचिका खारिज होने से संबंधित अधिकारियों को जरूरत के हिसाब से कार्रवाई करने से नहीं रोका जाएगा। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा, 'आज 12 ज्योतिर्लिंग और शक्तिपीठ इस प्रैक्टिस को फॉलो करते हैं। ये मनमाना और भेदभाव वाला है। यहां तक कि गृह मंत्रालय ने भी आंध्र प्रदेश से इसकी समीक्षा करने को कहा है। चूंकि, भारत में 60 प्रतिशत पर्यटन धार्मिक है, इसलिए ये भगदड़ की प्रमुख वजह भी है।' सुप्रीम कोर्ट में ये याचिका विजय किशोर गोस्वामी ने डाली थी। उन्होंने मंदिरों में अतिरिक्त शुल्क लेकर 'वीआईपी दर्शन' के चलन को आर्टिकल 14 के तहत समानता के अधिकार और आर्टिकल 21

के तहत व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन बताया। उन्होंने दलील दी कि जो लोग इस तरह का शुल्क अदा करने में असमर्थ हैं, ये उनके खिलाफ भेदभाव है। याचिका में जोर देकर कहा गया था कि कई मंदिर 400 से 500 रुपये में लोगों के लिए विशेष दर्शन की व्यवस्था करते हैं। इससे आम श्रद्धालु और खासकर महिलाएं, स्पेशली एबल्ड लोग और सीनियर सिटिजंस को दर्शन में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह मामला देश भर के मंदिरों में आम लोगों और वीआईपी के बीच भेदभाव के मुद्दे को उठाता है। वीआईपी दर्शन की सुविधा से आम लोगों को लंबी कतारों में इंतजार करना पड़ता है, जबकि वीआईपी आसानी से दर्शन कर लेते हैं। ये एक जगह नही है, श्रद्धालु को इस समस्या से अधिकांश जगह रूबरू होना पड़ता है। जगहझ्रजगह मंदिरों में इस समस्या का सामना होता है। लगभग 40 साल पहले हम कोलकाता गए। कालिका जी मंदिर में हम श्रद्धालुओं की लाइन में लगे थे कि हमारे एक साथी ने देखा और हमें इशारा कर अपने पास बुला लिया। यहां पुजारी पांच रूपया प्रति व्यक्ति लेकर सीधे दर्शन करा रहे थे। अभी वेट द्वारिका जाना हुआ। हम परिवार के छह सदस्य थे। एक पंडित जी ने हमसे पांच सौ रुपए लिए। अलग लाइन से हमें आराम से दर्शन कराए। भीड़-भाड़ भी बची। वैसे दर्शन में दो से तीन घंटे लगते पांच सौ रुपए में आधा घंटा में दर्शन कर मंदिर से बाहर आ गए। करीब दस साल पहले हम गुजरात में अम्बा जी गए थे। दर्शन की लाइन में लगे थे कि कर्मचारियों ने यह कह कर हमके रोक दिया कि दर्शन का समय समाप्त हो गया, जबकि कुछ अन्य को लगातार प्रदेश दिया जा रहा। किसी तरह हम अन्यों वाली पंक्ति में शामिल हुए। तब दर्शन हुए। दर्शन भी बड़े आराम से हुए। काफी समय हम मंदिर में रूके, जबकि ऐसा पहले संभव नही था। इस तरह का भेदभाव हमें कई जगह देखने को मिला। उज्जैन में तो आप पंडित को पांच सौ के आसपास रुपए दीजिए। वह मंदिर के गर्भ गृह में ले जाकर पूजन अर्चन कराते हैं। जो ये रकम नही देते वे गर्भगृह के बाहर ही दूर से दर्शन कर तृप्त हो जाते हैं। ओंकारेश्वर में तो पंडित जी पूजा भी आराम से और श्रद्धालुओं की पंक्ति से अलग लेकर कराते हैं। मथुरा जी के बांके बिहारी मंदिर में सुप्रीम आदेश से यह व्यवस्था रूकी है, अन्यथा लगभग सभी मंदिरों की हालत ऐसी ही है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिका तो खारिज कर दी, किंतु इस वीआईपी दर्शन पर रोक वाली गेंद केंद्र सरकार के पाले में यह कह कर डाल दी। बेंच ने कहा कि बेंच इस मुद्दे से सहमत है, लेकिन अनुच्छेद 32 के तहत निर्देश जारी नहीं कर सकती। पूर्व मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि यह एक नीतिगत मामला है।

भारत की सफलता का अनुसरण कर रहे पाकिस्तान के चयनकर्ता आकिब जावेदकर

ाची। भारत ने हाल के वर्षों में सीमित ओवरों के क्रिकेट में काफी सफलता हासिल की है। इससे अब पाकिस्तान के चयनकर्ता आकिब जावेद भी प्रभावित हैं। आकिब का कहना है कि वह भारत की सफलता की कहानी का अनुसरण कर रहे हैं। पाकिस्तान के चयनकर्ता और राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी के प्रमुख आकिब जावेद ने खुलासा किया है कि वह भारत की सफलता की कहानी का अनुसरण कर रहे हैं और उन्होंने अपने देश में इसे लागू करने की कोशिश की है। भारत ने सीमित ओवरों की क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है। भारतीय टीम ने पिछले साल टी20 विश्व कप, इस साल की शुरूआत में दुबई में चैंपियंस ट्रॉफी और सितंबर में एशिया कप जीता। एशिया कप के फाइनल में उसने पाकिस्तान को हराया था। पूर्व तेज गेंदबाज आकिब ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के एक पॉडकास्ट में कहा, मैंने भारत की सफलता को देखा है और पाकिस्तान क्रिकेट की बेहतरी के लिए योजनाओं को लागू करने की कोशिश की है।

'धुरंधर' के गाने 'शरारत' के लिए तमन्ना भाटिया थीं पहली पसंद

फिर आदित्य धर ने क्यों किया रिजेक्ट?

फिल्म 'धुरंधर' के गाने शरारत के लिए पहले तमन्ना भाटिया का नाम कोरियोग्राफर के दिमाग में आया था, हालांकि फिल्म के निर्देशक आदित्य धर का कुछ और ही सोचना था। आखिर क्यों तमन्ना इस गाने में कास्ट नहीं हुईं, चलिए जानते हैं। बॉलीवुड में जब भी दमदार डांस नंबर की बात होती है, तो सबसे पहला नाम तमन्ना भाटिया का लिया जाता है। स्त्री 2 के आज की रात से लेकर घफूर जैसे गानों ने उन्हें स्पेशल सॉन्ग की क्वीन बना दिया है। ऐसे में जब फिल्म धुरंधर के चर्चित गाने 'शरारत' को लेकर यह खुलासा हुआ कि तमन्ना को इस गाने के लिए रिजेक्ट कर दिया गया था, तो इंडस्ट्री से लेकर फैंस तक सभी हैरान रह गए। कोरियोग्राफर की पहली पसंद थीं तमन्ना फिल्म 'धुरंधर' के कोरियोग्राफर विजय गांगुली ने हाल ही में 'फिल्मी ग्यान' के साथ एक इंटरव्यू में इस पूरे मामले पर खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि जब शरारत गाने की प्लानिंग चल रही थी, तब उनके दिमाग में सबसे पहला नाम तमन्ना भाटिया का ही आया था। उनके मुताबिक, तमन्ना की स्क्रीन प्रेजेंस और डांसिंग स्टाइल इस तरह के गाने के लिए एकदम परफेक्ट बैठती थी। फिर क्यों तमन्ना नहीं हुईं कास्ट? विजय गांगुली ने बताया कि तमन्ना का नाम डायरेक्टर आदित्य धर के सामने रखा गया था, लेकिन आदित्य इस फैसले को लेकर पूरी तरह साफ थे। उनका मानना था कि वो फिल्म में ऐसा कोई गाना नहीं चाहते, जो कहानी से हटकर सिर्फ एक स्टार पर फोकस करे। अगर गाने में तमन्ना होतीं, तो दर्शकों का ध्यान कहानी की बजाय सिर्फ उन्हीं पर टिक जाता। कहानी को रखा स्टारडम से ऊपर आदित्य धर ने यह तय किया कि शरारत को एक पारंपरिक आइटम सॉन्ग नहीं बनाया जाएगा, बल्कि कहानी का हिस्सा रखा जाएगा। यही वजह रही कि गाने में एक नहीं, बल्कि दो कलाकारों को लिया गया। आखिरकार इस गाने के लिए आयशा खान और क्रिस्टल डिसूजा को चुना गया, ताकि फोकस किसी एक चेहरे पर नहीं, बल्कि सीन और नैरेटिव पर बना रहे। शादी के सीन से जुड़ा था गाना कोरियोग्राफर के मुताबिक, 'शरारत' गाना रणवीर सिंह और सारा अर्जुन के वेडिंग रिसेप्शन सीन का हिस्सा है। उस सीन में सिर्फ डांस ही नहीं, बल्कि कई अहम कहानी मोमेंट्स भी चलते हैं। ऐसे में डायरेक्टर नहीं चाहते थे कि गाने की वजह से फिल्म की रफ्तार या कहानी का असर कमजोर पड़े। इंटरनेट पर छाया 'शरारत' दिलचस्प बात यह है कि इस गाने को काफी ज्यादा पंसद किया जा रहा है। सोशल मीडिया पर गाने पर अब तक कई रील्स बनाई जा चुकी हैं। 'शरारत' गाना रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर छा गया है। आयशा खान और क्रिस्टल डिसूजा की केमिस्ट्री और एनर्जी को दर्शकों ने खूब सराहा। यही नहीं, इस गाने पर सेलेब्स भी रिएक्ट कर रहे हैं।

रणवीर सिंह स्टारर धुरंधर पर आया कंगना का दिल, कहा- सभी ने क्या शानदार काम किया है!

देश में हर तरफ श्धुरंधरश के ही चर्चे हैं। सोशल मीडिया से लेकर बॉक्स ऑफिस तक रणवीर सिंह की फिल्म अपना ही जलवा बिखेर रही है। रिलीज के 15 दिनों के अंदर इसने 800 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है। आम लोगों से लेकर सेलेब्स तक श्धुरंधरश की तारीफ करते नहीं थक रहे। वहीं, हाल ही में बॉलीवुड एक्ट्रेस और भाजपा सांसद कंगना रनौत ने भी यह फिल्म देखी और इसके बाद अपना रिव्यू भी दिया।

कंगना रनौत ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर धुरंधर की तारीफ करते हुए लिखा, मैंने धुरंधर देखी और मुझे बहुत पसंद आई। इस आर्ट और क्राफ्ट के मास्टरपीस से मैं बहुत प्रभावित हुई हूं, लेकिन ईमानदारी से कहूं तो फिल्म निमार्ता के इरादे की मैं बहुत प्रशंसा करती हूं। डियर आदित्य धर जी बॉर्डर पर हमारे डिफेंस फोर्सेस, सरकार में हमारे मोदी जी और बॉलीवुड सिनेमा में आप, खूब कम्बल कुटाई करो इन पाकिस्तानी आतंकवादियों की, मजा आ गया। देखते वक्त बस सीटियां और ताली बजाती रही। सभी ने क्या शानदार काम किया है। लेकिन, इस शो के धुरंधर खुद आदित्य धर हैं। बहुत-बहुत बधाई यामी गौतम। बता दें, रणवीर सिंह स्टारर धुरंधर 5 दिसंबर को पर्दे पर रिलीज हुई है। इसमें रणवीर के अलावा अक्षय खन्ना, आर माधवन, सारा अर्जुन, अर्जुन रामपाल, संजय दत्त और राकेश बेदी जैसे कलाकार भी अहम भूमिका में नजर आए हैं। फिल्म में अक्षय खन्ना के रहमान डकैत के किरदार को भी खूब पसंद किया जा रहा है।

एक्शन सीन की शूटिंग के दौरान बुरी तरह घायल हुए इमरान हाशमी, सफल सर्जरी के बाद जारी रखेंगे काम

बॉलीवुड के चर्चित और रोमांटिक हीरो इमरान हाशमी एक बार फिर सुर्खियों में हैं, लेकिन इस बार वजह उनकी कोई रिलीज या बयान नहीं बल्कि शूटिंग के दौरान लगी गंभीर चोट है। हाल ही में सामने आई जानकारी के मुताबिक, इमरान अपनी आने वाली फिल्म आवारापन 2 की शूटिंग के दौरान बुरी तरह घायल हो गए थे। हालांकि, इलाज और सर्जरी के बाद अब वो दोबारा काम पर लौटने को तैयार हैं। दरअसल, इमरान हाशमी राजस्थान में अपनी अपकमिंग फिल्म आवारापन 2 की शूटिंग कर रहे थे। इसी दौरान एक हाई-इंटेंस एक्शन सीन फिल्माते वक्त उनके पेट के टिश्यू फट गए, जिससे उनकी हालत गंभीर हो गई। इसके बाद उन्हें तुरंत मेडिकल ट्रीटमेंट दिया गया और सर्जरी करनी पड़ी। राहत की बात यह रही कि ऑपरेशन सफल रहा।सर्जरी के बाद डॉक्टरों ने इमरान को कुछ दिनों तक पूरी तरह आराम करने की सलाह दी थी, लेकिन एक्टर ने फिल्म के शेड्यूल को ध्यान में रखते हुए शूटिंग जारी रखने का फैसला किया। उनका मानना था कि अगर वे लंबा ब्रेक लेते हैं, तो इससे फिल्म की पूरी टीम और प्रोजेक्ट को नुकसान हो सकता है। इतने बड़े ऑपरेशन के बाद भी उन्होंने शूटिंग रोकने के बजाय काम जारी रखने को चुना, ताकि फिल्म की टाइमलाइन प्रभावित न हो। यह फैसला उनके फैंस और इंडस्ट्री दोनों के लिए काबिले-तारीफ है।

गौरतलब है कि आवारापन 2 साल 2007 में आई सुपरहिट फिल्म आवारापन का आधिकारिक सीक्वल है, जिसे दर्शकों ने खूब पसंद किया था। पहले पार्ट की लोकप्रियता को देखते हुए फैंस लंबे समय से इसके दूसरे हिस्से का इंतजार कर रहे हैं। फिल्म में इमरान हाशमी के साथ दिशा पाटनी अहम भूमिका में नजर आएंगी। फिलहाल मेकर्स ने रिलीज डेट का खुलासा नहीं किया है, लेकिन दर्शकों की एक्साइटमेंट साफ तौर पर देखने को मिल रही है।

धर्मेंद्र के साथ सीता और गीता में मुमताज ने क्यों नहीं किया अभिनय? वर्षों बाद तोड़ी चुप्पी

मुमताज ने अपने समय में नामी एक्टर्स के साथ अभिनय किया। लेकिन फिल्म सीता और गीता जैसी फिल्म पसंद आने के बाद भी उन्होंने क्यों नहीं की। इस फिल्म को ना करने की वजह कई साल बाद मुमताज ने साझा की है। धर्मेंद्र और हेमा मालिनी स्टारर फिल्म सीता और गीता आज भी दर्शकों को खूब पसंद आती है। लेकिन यह फिल्म हेमा मालिनी से पहले मुमताज को ऑफर हुई। फिल्म उन्हें पसंद भी थी लेकिन एक खास वजह से उन्होंने इस करने से इंकार कर दिया। आखिर धर्मेंद्र जैसे दिग्गज अभिनेता के साथ अभिनय करने का मौका उन्होंने क्यों खोया? जानिए। क्या था फिल्म ना करने का असल कारण? हाल में मुमताज ने विक्की लालवानी के पॉडकास्ट पर अपने करियर और जिंदगी को लेकर कई बातें साझा की हैं। इस पॉडकास्ट में उन्होंने बताया कि फिल्म सीता और गीता ना करने की असल वजह क्या थी? मुमताज कहती हैं, रमेश सिप्पी साहब उस समय एक बड़े प्रोड्यूसर और डायरेक्टर थे। उन्हें लगा कि मैं 2 लाख रुपये में यह फिल्म कर लूंगी। हर बड़े प्रोड्यूसर के अपने ईगो इश्यू होते हैं। लेकिन शुक्र है कि मुझे पहले से ही इतनी फिल्में मिल रही थीं। ऐसे में लगा कि यह फिल्म मेरे लिए कुछ खास नहीं कर पाएगी। पैसों की वजह से हमारे बीच बात नहीं बनी। लेकिन आप देखिए, हेमा मालिनी ने यह फिल्म की ना। इंडियन आइडल में धर्मेंद्र के साथ आने के लिए मांगे 18 लाख रुपये मुमताज बतौर अभिनेत्री सक्रिय नहीं हैं। लेकिन जब वह किसी टीवी शो में नजर आती हैं तो अच्छा-खासा अमाउंट चार्ज करती हैं। साल 2023 में वह धर्मेंद्र के साथ इंडियन आइडल 13 में गेस्ट के तौर पर दिखीं। दोनों ने स्टेज पर डांस भी किया। इस एपिसोड के लिए मुमताज ने 18 लाख रुपये लिए थे। यह बात उन्होंने हालिया पॉडकास्ट में साझा की है। वह कहती हैं, आज भी मुझे टेलीविजन पर बुलाते हैं। अब तक मुझसे सौ से ज्यादा बार संपर्क किया है। मैंने उन्हें अपनी फीस बताई। उन्होंने कहा कि लोग 3-4 लाख रुपये में गेस्ट के तौर पर आते हैं, तो मैंने उनसे कहा कि मैं उन लोगों के बारे में कुछ नहीं कह सकती। लेकिन यह मेरी फीस है। मैं हमेशा से ऐसी ही रही हूं। मैंने सिर्फ एक शो धर्मेंद्र जी के साथ किया और उसके लिए मैंने 18-20 लाख रुपये लिए थे। धर्मेंद्र और मुमताज का असल जिंदगी में रिश्ता बहुत अच्छा था। दोनों एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। धर्मेंद्र के निधन पर मुमताज बहुत दुखी थीं। उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए धर्मेंद्र से जुड़ी यादों को साझा किया था।

13 साल की उम्र में शुरू किया करियर, जानें कौन है जिसने मिजार्पुर में भाभी बनकर जीता दिल...

फिल्म इंडस्ट्री में कई सितारे ऐसे हैं जिन्होंने बेहद कम उम्र में अपने करियर की शुरूआत की और मेहनत के दम पर खास पहचान बनाई। ऐसी ही एक एक्ट्रेस हैं, जिन्होंने महज 13 साल की उम्र में बॉलीवुड में कदम रखा, साउथ सिनेमा में नाम कमाया और फिर वेब सीरीज मिजार्पुर में भाभी बनकर दर्शकों के दिलों पर छा गईं। हम बात कर रहे हैं एक्ट्रेस ईशा तलवार की। ईशा तलवार 22 दिसंबर को अपना 38वां जन्मदिन मना रही हैं। इस खास मौके पर जानते हैं उनके करियर से जुड़े कुछ दिलचस्प किस्से। ईशा तलवार फिल्मी परिवार से ताल्लुक रखती हैं। उनके पिता विनोद तलवार बॉलीवुड के मशहूर प्रोड्यूसर बोनी कपूर के साथ एक्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर के तौर पर काम कर चुके हैं। एक्टिंग के साथ-साथ ईशा एक बेहतरीन डांसर भी हैं। बचपन में उन्होंने कोरियोग्राफर टेरेंस लुईस के डांस स्कूल से जैज, हिप-हॉप और साल्सा जैसी डांस फॉर्म्स सीखी हैं। ईशा ने अपने अभिनय करियर की शुरूआत बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट की थी। उन्होंने अनिल कपूर की फिल्म हमारा दिल आपके पास है में बचपन में काम किया था। हालांकि, बतौर लीड एक्ट्रेस उन्हें पहला बड़ा ब्रेक साउथ सिनेमा में मिला। साल 2012 में आई मलयालम फिल्म थट्टाथिन मरायथु से ईशा ने धमाकेदार डेब्यू किया। इस फिल्म के लिए उन्हें एसआईआईएमए अवॉर्ड (बेस्ट फीमेल डेब्यू) से भी नवाजा गया। इसके बाद उन्होंने तेलुगु, तमिल और मलयालम फिल्मों में लगातार काम कर साउथ इंडस्ट्री में मजबूत पहचान बनाई। हिंदी सिनेमा में ईशा सलमान खान की फिल्म ट्यूबलाइट में नजर आईं। इसके बाद उन्होंने कालाकांडी, आर्टिकल 15 और कामयाब जैसी फिल्मों में अहम भूमिकाएं निभाईं, लेकिन इसके बावजूद उन्हें वह पहचान नहीं मिल पाई जिसकी उन्हें तलाश थी। साल 2020 में आई वेब सीरीज मिजार्पुर सीजन 2 ईशा तलवार के करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुई। इस सीरीज में उन्होंने माधवी भाभी का किरदार निभाया, जिसे दर्शकों ने खूब प्यार दिया। इस रोल के बाद ईशा रातों-रात चर्चा में आ गईं और उनकी इमेज पूरी तरह बदल गई। हाल ही में ईशा कुणाल खेमू की वेब सीरीज सिंगल पापा में भी अहम भूमिका निभाती नजर आईं, जहां उनके अभिनय को सराहा गया। साउथ से लेकर बॉलीवुड और ओटीटी तक, ईशा तलवार ने हर प्लेटफॉर्म पर अपनी एक्टिंग से साबित किया है कि मेहनत और टैलेंट के दम पर पहचान जरूर मिलती है।

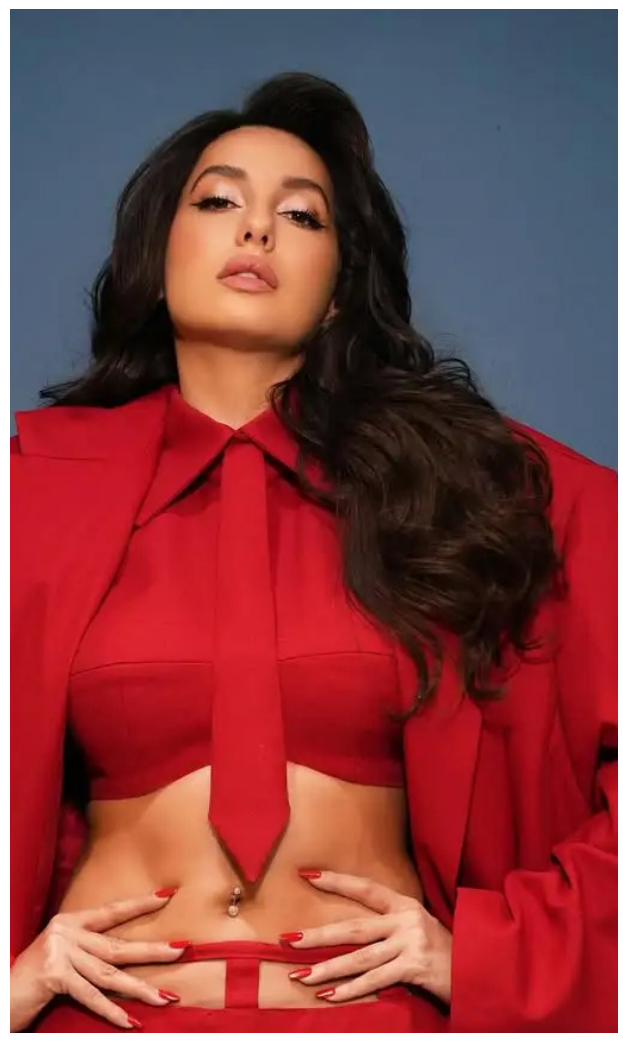

कार हादसे पर नोरा फतेही ने तोड़ी चुप्पी, बताई कैसी है हालत? फैंस को दी ये नसीहत

अभिनेत्री नोरा फतेही ने अपने साथ हुए कार हादसे के बारे में बात की है। उन्होंने अपने फैंस को नसीहत दी है। इसके अलावा शराबी ड्राइवर के बारे में भी बात की है। बॉलीवुड स्टार नोरा फतेही शुक्रवार, 20 दिसंबर को मुंबई में एक कार एक्सीडेंट का शिकार हो गईं। वह सनबर्न फेस्टिवल 2025 में जा रही थीं, जहां उन्हें डेविड गुएटा के साथ स्टेज पर परफॉर्म करना था। एक्सीडेंट के बाद, नोरा फतेही ने अपनी हेल्थ के बारे में अपडेट दिया। उन्होंने घटना के बारे में बताया और खुलासा किया कि नशे में धुत ड्राइवर के उनकी गाड़ी में टक्कर मारने के बाद वह परेशान हैं। नोरा ने दी हेल्थ अपडेट हादसे के कुछ घंटे के बाद, नोरा फतेही ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर बताया, 'नशे में धुत एक आदमी जो शराब पीकर गाड़ी चला रहा था, उसने मेरी कार में टक्कर मार दी और टक्कर काफी जोरदार थी। हादसे में मेरा सिर खिड़की से टकरा गया। मैं जिंदा हूं और ठीक हूं। कुछ मामूली चोटों, सूजन और हल्के सिर में चोट के अलावा, मैं ठीक हूं। मैं इसके लिए शुक्रगुजार हूं। यह बहुत बुरा हो सकता था, लेकिन मैं यह कहने आई हूं कि आपको शराब पीकर गाड़ी नहीं चलानी चाहिए। सच कहूं तो मुझे शराब से नफरत है।' नशा नहीं करती नोरा फतेही इसके अलावा, उन्होंने कहा कि वह हमेशा शराब के आइडिया के खिलाफ रही हैं। उन्होंने कभी शराब नहीं पी है, न ही वह ड्रग्स या गांजा लेती हैं। नोरा ने आगे कहा कि शराब पीकर गाड़ी चलाने से लोग खतरे में पड़ जाते हैं। नोरा ने बताया, 'यह सब कहने के बाद, मैं बस सबको बताना चाहती हूं कि मैं ठीक हूं। मुझे कुछ समय तक दर्द रहेगा। भगवान का शुक्र है कि मैं जिंदा हूं। मैं झूठ नहीं बोलूंगी। वह बहुत डरावना और दर्दनाक पल था। मैं अभी भी थोड़ी सदमे में हूं। नोरा ने किया परफॉर्म हादसे के बावजूद, नोरा ने अपने वादे पूरे किए और सनबर्न 2025 के स्टेज पर डेविड गुएटा के साथ परफॉर्म किया।

अंडर-19 एशिया कप के फाइनल में समीर मिन्हास ने रचा इतिहास

दुबई। मिन्हास ने शुरूआत से ही भारतीय गेंदबाजों पर दबाव बनाया। पहले उन्होंने 29 गेंदों में अर्धशतक पूरा किया, फिर इस पारी को आगे बढ़ाते हुए महज 71 गेंदों में शतक में तब्दील किया। अंडर-19 एशिया कप के फाइनल में पाकिस्तान के युवा बल्लेबाज समीर मिन्हास ने धमाकेदार प्रदर्शन से सभी को हैरत में डाल दिया। भारत के खिलाफ दुबई में खेले जा रहे खिताबी मुकाबले में समीर ने ऐतिहासिक 172 रन की पारी खेली और इतिहास रच दिया। वह फाइनल में सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर बनाने वाले बल्लेबाज बन गए। फाइनल में चमके समीर मिन्हास मिन्हास ने शुरूआत से ही भारतीय गेंदबाजों पर दबाव बनाया। पहले उन्होंने 29 गेंदों में अर्धशतक पूरा किया, फिर इस पारी को आगे बढ़ाते हुए महज 71 गेंदों में शतक में तब्दील किया। यह इस टूर्नामेंट में उनका दूसरा शतक है। वह अंडर-19 एशिया कप में सबसे तेज शतक लगाने के मामले में दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। शीर्ष पर भारत के वैभव सूर्यवंशी हैं। वह 113 गेंदों में 17 चौके और नौ छक्के की मदद से 172 रन बनाकर आउट हुए। 13 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा समीर मिन्हास ने 2012 के फाइनल में सामी असलम (134 रन) द्वारा बनाए गए रिकॉर्ड को तोड़ा।

क्या सिस्टम से तल्खी पड़ी इमरान खान को भारी पाकिस्तानी आवाम ने खोल दी PAK सेना की पोल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा बीबी को भ्रष्टाचार मामले में 17 साल की सजा मिलने के बाद पड़ोसी मुल्क में सियासी बहस तेज हो गई है। इस फैसले को लेकर आम लोगों और विशेषज्ञों के बीच ह्यसिस्टमह्ल की भूमिका पर गंभीर सवाल उठने लगे हैं। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा बीबी को तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले में 17-17 साल की सजा सुनाए जाने के बाद देश में राजनीतिक और सामाजिक हलचल तेज हो गई है। इस फैसले को लेकर जहां कुछ लोग इसे कानून के दायरे में सही ठहरा रहे हैं, वहीं बड़ी संख्या में नागरिक और विश्लेषक इसे राजनीतिक प्रतिशोध से जोड़कर देख रहे हैं। 'सिस्टम के पसंदीदा होते, तो क्या यही सजा दी जाती?' लाहौर के वरिष्ठ पत्रकार रहील मौविया का कहना है कि इस सजा के दो अहम पहलू हैं। उनके अनुसार, यदि फैसला के वल

तथ्यात्मक आधार पर है, तो सजा को जायज कहा जा सकता है। लेकिन अगर यह सजा इमरान खान के सिस्टम से टकराव और हालिया मतभेदों के कारण दी गई है, तो यह गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ और उसके समर्थक यही सवाल उठा रहे हैं कि अगर इमरान खान सिस्टम के पसंदीदा होते, तो क्या यही सजा दी जाती? आम जनता में लोकतंत्र को लेकर चिंता

लाहौर निवासी जकी उल्लाह मुजाहिद ने इस पूरे घटनाक्रम को पाकिस्तान के लोकतंत्र के लिए नुकसानदेह बताया। उनका कहना है 'इस तरह की कार्रवाइयों ने लोकतंत्र और संस्थाओं पर जनता का भरोसा कमजोर किया है। देश को आगे बढ़ाना है, तो हर संस्था को संविधान और कानून के दायरे में रहकर काम करना होगा।' न्यायपालिका पर उठे गंभीर सवाल एक अन्य नागरिक हामिद रियाज डोगर ने न्यायपालिका की स्थिति पर सवाल उठाते हुए कहा कि लोगों का अब अदालतों के फैसलों पर भरोसा नहीं रहा। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि 9 मई के मामलों में कई लोगों को बिना मौके पर मौजूद हुए भी 10 साल की सजा दी गई। अब तोशाखाना-2 केस में 17 साल की सजा अदालतें कुछ भी कहें, लेकिन जनता का विश्वास खत्म हो चुका है। तोशाखाना के स क्या है? पाकिस्तान के कानून के अनुसार किसी विदेशी राज्य के गणमान्य व्यक्तियों से प्राप्त कोई भी उपहार स्टेट डिपॉजिटरी यानी तोशाखाना में रखना होता है। अगर राज्य का मुखिया उपहार को अपने पास रखना चाहता है तो उसके लिए उसे इसके मूल्य के बराबर राशि का भुगतान करना होगा। यह एक नीलामी की प्रक्रिया के जरिए तय किया जाता है। ये उपहार या तो तोशाखाना में जमा रहते हैं या नीलाम किए जा सकते हैं और इसके माध्यम से अर्जित धन को राष्ट्रीय खजाने में जमा किया जाता है। 2018 में सत्ता में आए इमरान खान को आधिकारिक यात्राओं के दौरान करीब 14 करोड़ रुपये के 58 उपहार मिले थे। इन महंगे उपहारों को तोशाखाना में जमा किया गया था। बाद में इमरान खान ने इन्हें तोशखाने से सस्ते दाम पर खरीद लिया और फिर महंगे दाम पर बाजार में बेच दिया। इस पूरी प्रक्रिया के लिए उन्होंने सरकारी कानून में बदलाव भी किए। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इमरान ने 2.15 करोड़ रुपये में इन गिफ्ट्स को तोशखाने से खरीदा था और इन्हें बेचकर 5.8 करोड़ रुपये का मुनाफा कमा लिया। अदालत ने इसे भ्रष्टाचार मानते हुए सजा सुनाई।

इस्लामी विचारधारा से अमेरिका को खतरा यूएस खुफिया विभाग की निदेशक तुलसी गबार्ड का बड़ा बयान

वॉशिंगटन। अमेरिका के खुफिया विभाग की निदेशक तुलसी गबार्ड ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि अमेरिका को इस्लामी

विचारधारा से खतरा है। उन्होंने कहा कि देश में शरिया कानून लागू होने की मांग की जा रही है और मौलवी युवाओं को कट्टरपंथी बना रहे हैं। अमेरिका में वार्षिक अमेरिका फेस्ट या एमफेस्ट 2025 सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन को अमेरिका की डायरेक्टर ऑफ नेशनल इंटेलिजेंस तुलसी गबार्ड ने भी संबोधित किया। अपने संबोधन में तुलसी गबार्ड ने इस्लाम और इस्लामी विचारधारा को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि इस्लामी विचारधारा अमेरिका के लिए बड़ा खतरा है। तुलसी गबार्ड ने कहा- युवाओं को कट्टरपंथी बनाया जा रहा तुलसी गबार्ड ने अपने संबोधन में कहा, 'इस्लामी विचारधारा के खतरे कई रूपों में हमारे सामने आ रहे हैं। जब क्रिसमस आ रहा है तो जर्मनी में इस्लामी विचारधारा के खतरे के चलते ही क्रिसमस बाजार रद्द किए जा रहे हैं। मिशिगन, मिनयापोलिस, मिनेसोटा में मौलवी खुलेआम इस इस्लामी विचारधारा को बढ़ावा दे रहे हैं और युवाओं को कट्टरपंथी बना रहे हैं।' तुलसी गबार्ड ने कहा, 'इस साल की शुरूआत में इस्लामिक संगठनों की एक बैठक हुई थी, जिसमें अमेरिका में कई जगहों पर शरिया कानून लागू करने की मांग की गई थी। ह्यूस्टन जैसी जगह पर ये पहले से ही लागू है। ये हमारी सीमाओं में पहले से ही लागू है। पैटरसन, न्यूजर्सी अपने आप को पहला मुस्लिम शहर बताने में गर्व महसूस करता है। इस्लामी कानूनों को लोगों पर थोपने की कोशिश हो रही है।' 'अमेरिका को इस्लामी विचारधारा से गंभीर खतरा' तुलसी गबार्ड ने कहा कि जब हम इस्लामी विचारधारा के खतरे की बात कर रहे हैं तो बता दें कि इस्लामी विचारधारा में किसी के लिए कोई आजादी नहीं होगी। चार्ली किर्क ने कहा था कि हमारे देश में हर किसी की आजादी एक मूलभूत अधिकार है, क्योंकि ये हमें भगवान से मिली है। हम इस इस्लामी विचारधारा के खतरे को अच्छी तरह से समझते हैं, जो अल्लाह के अलावा किसी और भगवान के अस्तित्व से ही इनकार करते हैं।

बांग्लादेश के चटगांव में भारतीय वीजा सेवाएं अनिश्चितकाल के लिए बंद

नई दिल्ली। बांग्लादेश में बढ़ती हिंसा के माहौल के बीच चटगांव स्थित भारतीय वीजा आवेदन केंद्र ने सभी वीजा सेवाएं तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दी हैं। यह कदम भारत के सहायक

उच्चायोग के पास हुई सुरक्षा घटना के बाद उठाया गया। वीजा केंद्र ने कहा कि हालात की समीक्षा के बाद ही सेवाएं फिर से बहाल होंगी। बांग्लादेस में जारी हिंसा के बीच एक बड़ी खबर सामने आ रही है। जहां बांग्लादेश के चटगांव स्थित भारतीय वीजा आवेदन केंद्र (आईवीएसी) ने तत्काल प्रभाव से सभी वीजा सेवाएं बंद करने की घोषणा की है। यह फैसला शहर में स्थित भारत के सहायक उच्चायोग (एएचसीआई) के पास हुई एक सुरक्षा घटना के बाद लिया गया है। आईवीएसी बांग्लादेश ने बताया कि रविवार से वीजा सेवाएं अगले आदेश तक निलंबित रहेंगी। मामले में आईवीएसी की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि स्थानीय हालात की पूरी समीक्षा के बाद ही वीजा सेवाएं दोबारा शुरू करने पर फैसला लिया जाएगा। फिलहाल स्थिति को देखते हुए कोई तारीख तय नहीं की गई है। बता दें कि वीजा सेवाओं के निलंबन का फैसला ऐसे समय में लिया गया है, जब बांग्लादेश के कई हिस्सों में हिंसक घटनाएं सामने आ रही हैं। रविवार को मयमनसिंह जिले में एक 27 वर्षीय हिंदू युवक दीपु चंद्र दास की हत्या के मामले में 10 लोगों को गिरफ्तार किया गया। भीड़ ने किया युवक पर हमला मामले में आरोप है कि युवक पर कथित आरोपों को लेकर भीड़ ने हमला किया था, जिससे उसकी मौत हो गई। इस घटना से देशभर में आक्रोश फैल गया। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए गिरफ्तारी की पुष्टि की। उन्होंने बताया कि रैपिड एक्शन बटालियन (आरएबी) ने 7 और पुलिस ने 3 आरोपियों को पकड़ा है। ढाका में अभी भी तनाव मामले में तनाव इतना बढ़ गया कि राजधानी ढाका में भी अभी हालात तनावपूर्ण बने हुए हैं। ढाका यूनिवर्सिटी परिसर में इंकलाब मंच के संयोजक शरीफ उस्मान हादी के जनाजे के बाद उनके समर्थकों ने शाहबाग इलाके की ओर मार्च किया। हादी की कुछ दिन पहले गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उनकी मौत के बाद ढाका में लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं। रविवार को भी शाहबाग चौराहे पर बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा होकर न्याय की मांग करते नजर आए।

बंगबंधु शेख मुजीब हॉल का नाम बदला रखा गया उस्मान हादी हॉल

ढाका। ढाका यूनिवर्सिटी के बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान हॉल का नाम बदलकर अब 'शहीद शरीफ उस्मान हादी हॉल' कर दिया गया है। जुलाई विद्रोह से जुड़े युवा नेता हादी की मौत के बाद छात्रों ने यह कदम उठाया है। छात्र नेता शरीफ उस्मान हादी की मौत के बाद से बांग्लादेश में राजनीतिक और सामाजिक अस्थिरता लगातार बढ़ती जा रहा है। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, राजधानी ढाका सहित कई इलाकों में असंतोष का माहौल है। लोग अभी भी सड़कों पर हैं। इस बीच ढाका यूनिवर्सिटी ने अपने एक हॉल का नाम बदलकर शरीफ उस्मान हादी कर दिया है। इस हॉल का नाम बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान के नाम पर था। हादी एक युवा नेता थे और

जुलाई के विद्रोह में शामिल थे, जिसमें शेख हसीना की सरकार गिर गई थी। बता दें कि सिर में गोली लगने के छह दिन बाद गुरुवार को हदी की मौत हो गई थी। उन्हें 12 दिसंबर को सेंट्रल ढाका में एक चुनावी अभियान के दौरान नकाबपोश बंदूकधारियों ने सिर में गोली मार दी थी, जिसके बाद सिंगापुर में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई थी। उनकी मौत के बाद पूरे बांग्लादेश में बड़े पैमाने पर हिंसक घटनाएं हुईं। ढाका ट्रिब्यून के मुताबिक, हॉल यूनियन ने शनिवार को मुख्य गेट पर लगी शेख मुजीबुर रहमान के नाम की नेमप्लेट हटाकर उसकी जगह 'शहीद शरीफ उस्मान हादी हॉल' नाम की नेमप्लेट लगा दी। इसके अलावा कई छात्र हॉल की मुख्य इमारत पर बनी बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान की ग्रैफिटी म्यूरल (भित्ति चित्र) पर पेंट करके उसे मिटाने लगे। रिपोर्ट के अनुसार, ढाका यूनिवर्सिटी सेंट्रल स्टूडेंट्स यूनियन (डीयूसीएसयू) के सांस्कृतिक मामलों के सचिव मुसद्दिक इब्र अली मोहम्मद ने घोषणा की थी कि शनिवार रात 9:30 बजे क्रेन की मदद से पुरानी नेमप्लेट हटा दी जाएगी। मौके पर मौजूद लोगों के मुताबिक, हॉल का नाम मिटाने का काम रात करीब 9:45 बजे शुरू हुआ और रात 11:15 बजे तक ग्रैफिटी पर पेंट करने का काम भी शुरू कर दिया गया। जब हॉल काउंसिल के नेताओं से ग्रैफिटी और नाम हटाने की अनुमति के बारे में पूछा गया, तो काउंसिल के वीपी मुस्लिमुर रहमान ने मीडिया को बताया, 'छात्रों ने इसे हटाने की मांग की थी, इसलिए हम छात्रों के फैसले के आधार पर ही इसे हटा रहे हैं।

यूक्रेन युद्ध पर शांति की उम्मीद, यूएस के प्रस्ताव पर रूस बोला- बातचीत सकारात्मक दिशा में

वॉशिंगटन। यूक्रेन युद्ध को खत्म करने के लिए अमेरिका की ओर से पेश शांति योजना पर रूस और अमेरिका के बीच बातचीत जारी है। रूस ने इसे रचनात्मक बताया है। हालांकि यूक्रेन और रूस की मांगों में बड़ा अंतर बना हुआ है। इसी बीच यूरोपीय संघ ने यूक्रेन को अगले दो साल में 90 अरब यूरो की मदद देने का फैसला किया है। करीब चार साल से जारी यूक्रेन युद्ध को खत्म करने की कोशिशों के बीच अमेरिका के शांति प्रस्ताव पर रूस और अमेरिका के बीच बातचीत आगे बढ़ती दिख रही है। रूस ने कहा है कि यूक्रेन

को लेकर अमेरिका की ओर से रखी गई शांति योजना पर चर्चा रचनात्मक तरीके से चल रही है। यह बयान ऐसे समय आया है, जब युद्ध के कारण यूरोप और दुनिया भर में राजनीतिक और आर्थिक अनिश्चितता बनी हुई है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के एक विशेष दूत ने बताया कि अमेरिका के प्रस्तावित शांति प्लान पर बातचीत फ्लोरिडा में जारी है और यह प्रक्रिया आगे भी चलेगी। यह बातचीत ट्रंप प्रशासन की उस कूटनीतिक पहल का हिस्सा है, जिसके जरिए यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने की कोशिश की जा रही है। इससे पहले इसी हफ्ते बर्लिन में यूक्रेन और यूरोपीय अधिकारियों के साथ भी बैठकें हुई थीं। फ्लोरिडा में अमेरिका-रूस की अहम बैठक रूसी दूत किरिल ने कहा कि शांति वार्ता पहले शुरू हुई थी और शनिवार को भी जारी रही। उन्होंने बताया कि यह बातचीत रविवार को भी आगे बढ़ेगी। किरिल ने अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ और ट्रंप के दामाद जेरेड कुशनर से मुलाकात की। रूस का कहना है कि मौजूदा दौर की चर्चा गंभीर है और इसमें समाधान निकालने की कोशिश हो रही है। यूक्रेन की चिंता और अमेरिका की भूमिका यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने कहा है कि आगे बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि रूस के साथ बातचीत के बाद अमेरिका का रुख क्या रहता है। उन्होंने यह बयान ऐसे समय दिया, जब यूक्रेन के मुख्य वातार्कार ने अमेरिका में अमेरिकी और यूरोपीय साझेदारों के साथ अलग-अलग बैठकों को पूरा करने की जानकारी दी। यूक्रेन चाहता है कि किसी भी शांति समझौते में उसकी सुरक्षा और संप्रभुता से समझौता न हो। रूस के सख्त रुख से मुश्किलें हालांकि शांति प्रयासों के बावजूद बातचीत आसान नहीं है। ट्रंप प्रशासन की पहल को मॉस्को और कीव की एक-दूसरे से टकराती मांगों का सामना करना पड़ रहा है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने हाल के दिनों में संकेत दिए हैं कि वह यूक्रेन पर अपनी अधिकतम शर्तों से पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। पुतिन ने साफ कहा है कि यदि यूक्रेन रूस की शर्तों को नहीं मानता, तो रूस अपने सैन्य लक्ष्य हासिल करने में जुटा रहेगा। इस बीच युद्ध के मैदान में भारी नुकसान के बावजूद रूसी सेना धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। यूरोप की तैयारी और आर्थिक मदद युद्ध के बीच यूरोपीय संघ ने भी बड़ा फैसला लिया है।

सऊदी अरब में रहने वाले लोग भी खरीद सकेंगे शराब जानें मुस्लिम देश में किसे मिली छूट

रियाद। सऊदी अरब ने चुपचाप अपनी शराब नीति में बदलाव करते हुए गौर-मुस्लिम विदेशी निवासियों को शराब खरीदने की अनुमति दे दी है। रियाद के डिप्लोमैटिक क्वार्टर में स्थित एकमात्र अधिकृत स्टोर तक अब प्रीमियम रेजिडेंसी धारकों की पहुंच बढ़ाई गई है। सऊदी अरब में शराब बेचने और खरीदने पर पाबंदी थी, लेकिन अब वहां रहने वाले गैर-मुस्लिम विदेशी लोग शराब खरीद सकते हैं। सऊदी अरब ने चुपचाप अपनी एकमात्र शराब की दुकान तक लोगों की पहुंच बढ़ा दी है, जिससे अमीर विदेशी निवासी शराब खरीद सकते हैं। हालांकि इस फैसले की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है, लेकिन यह बात फैल गई है। इसके साथ ही सऊदी राजधानी रियाद के डिप्लोमैटिक क्वार्टर में इस साधारण, बिना निशान वाली दुकान पर कारों और लोगों की लंबी लाइनें देखी जा सकती हैं। 1950 के दशक में लगा था शराब पर प्रतिबंध यह दुकान जनवरी 2024 में गैर-मुस्लिम राजनयिकों के लिए खोली गई थी। नए नियमों के तहत, गैर-मुस्लिम विदेशी जिनके पास प्रीमियम रेजिडेंसी है, वे शराब खरीद सकते हैं। यह रेजिडेंसी परमिट विशेष कौशल वाले विदेशियों, निवेशकों और उद्यमियों को दिया जाता है। इस्लाम के सबसे पवित्र स्थलों का घर सऊदी अरब, 1950 के दशक की शुरूआत से ही शराब पर प्रतिबंध लगाए हुए है। इस दुकान को शराब की नियंत्रित बिक्री का सावधानीपूर्वक परीक्षण करने के एक तरीके के रूप में देखा जा रहा है। सऊदी अरब के वास्तविक शासक, क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान, और उनके पिता, किंग सलमान ने साम्राज्य में एक उदारीकरण नीति अपनाई है, जिसका लक्ष्य देश में पर्यटन को आकर्षित करना, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना और कच्चे तेल पर आर्थिक निर्भरता को कम करना है। इस्लामी शरिया कानून का पालन करने वाले इस देश में सिनेमाघर खोले गए हैं, महिलाओं को वाहन चलाने की अनुमति दी गई है और बड़े संगीत समारोहों की मेजबानी की है। हालांकि राजनीतिक भाषण और असहमति व्यक्त करना अभी भी सख्त अपराध है, जिसके लिए मृत्युदंड भी दिया जा सकता है। दुकान में ये चीजें वर्जित यह दुकान आज भी आम जनता के लिए प्रतिबंधित है। बिना किसी नाम या बोर्ड वाली यह दुकान ड्यूटी-फ्री स्टोर जैसी लगती है, जिसका मालिकाना हक आधिकारिक तौर पर गोपनीय रखा गया है। यहां सुरक्षा के बेहद कड़े इंतजाम किए गए हैं। हर आगंतुक की पात्रता की जांच की जाती है और प्रवेश से पहले उनकी गहन तलाशी ली जाती है। स्टोर के भीतर मोबाइल फोन और कैमरे पूरी तरह वर्जित हैं, और सुरक्षाकर्मी स्मार्ट चश्मों तक की जांच कर रहे हैं ताकि अंदर की कोई भी तस्वीर बाहर न जा सके। लोगों ने क्या कहा? एसोसिएटेड प्रेस से बात करते हुए कुछ ग्राहकों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि स्टोर में कीमतें काफी अधिक हैं। जहां विदेशी राजनयिकों को इन खरीदारी पर टैक्स से छूट दी गई है, वहीं प्रीमियम रेजिडेंसी धारकों को पूरा भुगतान करना पड़ रहा है। ग्राहकों के अनुसार स्टोर में शराब का स्टॉक तो पर्याप्त है, लेकिन बीयर और वाइन के विकल्प फिलहाल सीमित हैं। गौरतलब है कि प्रीमियम रेजिडेंसी परमिट सऊदी अरब की उस योजना का हिस्सा है, जिसके तहत दुनिया भर के विशेषज्ञों और निवेशकों को आकर्षित किया जा रहा है। इसके लिए उच्च आय या भारी निवेश की आवश्यकता होती है और यह धारकों को बिना किसी सऊदी स्पॉन्सर के संपत्ति खरीदने और व्यापार करने की आजादी देता है। बता दें कि वर्तमान में, जो सऊदी नागरिक या निवासी शराब पीना चाहते हैं वे अक्सर पड़ोसी देश बहरीन की यात्रा करते हैं। जहां यह मुस्लिमों और गैर-मुस्लिमों दोनों के लिए कानूनी रूप से उपलब्ध है। छुट्टियों के दौरान बहरीन में सऊदी अरब और खाड़ी देशों के पर्यटकों की भारी भीड़ उमड़ती है, जबकि कुछ लोग दुबई जाना पसंद करते हैं। वहीं, देश के भीतर कुछ लोग तस्करी कर लाई गई महंगी शराब या जोखिम भरी 'होममेड' शराब का सहारा लेते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकती है। इसके विपरीत, सऊदी युवाओं के बीच अब 'अल्कोहल-फ्री' पेय पदार्थों का चलन बढ़ा है, जिसे वे अक्सर सोशल मीडिया पर फोटो खिंचवाने और पार्टी के माहौल का आनंद लेने के लिए इस्तेमाल करते हैं। क्यों लगा था प्रतिबंध? सऊदी अरब में शराब पर प्रतिबंध का इतिहास काफी पुराना है। मामले में देश के संस्थापक राजा अब्दुलअजीज ने 1951 में एक घटना के बाद शराब की बिक्री पर रोक लगा दी थी। उस समय उनके बेटे, प्रिंस मिशारी ने नशे की हालत में जेद्दा में तैनात ब्रिटिश उप-वाणिज्य दूत सिरिल ओसमैन को शॉटगन से मार दिया था। तब से देश में शराब को लेकर बेहद सख्त कानून लागू हैं।

अमेरिकी घेराबंदी के चलते वेनेजुएला का व्यापार ठप

वॉशिंगटन। अमेरिका की सरकार वेनेजुएला पर दबाव लगातार बढ़ा रही है। इसी के तहत अमेरिकी सेना ने वेनेजुएला के दूसरे व्यापारिक जहाज को जब्त कर लिया है। इससे पहले भी अमेरिका ने वेनेजुएला के एक तेल टैंकर को जब्त किया था। अमेरिका और वेनेजुएला के बीच तनाव बढ़ता ही जा रहा है और अब यह इस कदर बढ़ गया है कि अमेरिका ने वेनेजुएला का पूरा विदेशी व्यापार ही ठप कर दिया है। दरअसल अमेरिका ने वेनेजुएला के दूसरे व्यापारिक जहाज

को भी जब्त कर लिया है। इससे पहले भी अमेरिका ने वेनेजुएला के एक तेल टैंकर को भी जब्त कर लिया था। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, वेनेजुएला की निकोलस मादुरो सरकार पर दबाव बढ़ाते ही जा रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने किया था वेनेजुएला की घेराबंदी का एलान अमेरिकी अधिकारियों ने इस घटनाक्रम की जानकारी दी। यह कदम ट्रंप के उस एलान के बाद सामने आया है, जिसमें ट्रंप ने वेनेजुएला की घेराबंदी करने और सभी तेल टैंकरों को वेनेजुएला से लाने-ले जाने पर रोक लगाने का एलान किया था। इस एलान के बाद बीती 10 दिसंबर को भी अमेरिकी सुरक्षा बलों ने वेनेजुएला के तट पर उसके एक तेल टैंकर को जब्त कर लिया था। अधिकारियों ने बताया कि व्यापारिक जहाज को जब्त करने की ताजा कार्रवाई आपसी सहमति से हुई। जिसमें अमेरिकी अधिकारी जहाज पर चढ़े और उन्होंने जहाज को अपने कब्जे में ले लिया। बीते दिनों वेनेजुएला का तेल टैंकर अमेरिका ने लिया था जब्त ट्रंप, वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोसल मादुरो को कह चुके हैं कि अब उनके सत्ता में रहने के गिने-चुने ही दिन बचे हैं। ट्रंप ने हाल ही में मांग की थी कि वेनेजुएला ने जो वर्षों पहले अमेरिकी तेल कंपनियों की जो संपत्तियां जब्त की थी, अब वे उन्हें वापस करें।

हिंदू युवक की हत्या मामले में 10 आरोपी गिरफ्तार भारतीय सहायक उच्चायोग की सुरक्षा बढ़ी

ढाका। बांग्लादेश के मयमनसिंह में 27 वर्षीय हिंदू युवक दीपू चंद्र दास की भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या के मामले में सुरक्षा एजेंसियों ने 10 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। घटना को लेकर अंतरिम सरकार ने सख्त रुख अपनाते हुए दोषियों पर कड़ी कार्रवाई का भरोसा दिलाया है। बांग्लादेश के मयमनसिंह जिले में 27 वर्षीय हिंदू युवक दीपू चंद्र दास की बेरहमी से पीट-पीटकर हत्या के मामले में सुरक्षा एजेंसियों ने बड़ी कार्रवाई करते हुए अब तक 10 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। यह जानकारी बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा की। मुहम्मद यूनुस ने बताया कि इस मामले में रैपिड एक्शन बटालियन ने सात संदिग्धों को गिरफ्तार किया है, जबकि तीन आरोपियों को स्थानीय पुलिस ने पकड़ा है। सभी गिरफ्तारियां अलग-अलग इलाकों में चलाए गए विशेष अभियानों के तहत की गईं। भीड़ ने पीटकर की थी हत्या, शव को आग के हवाले किया जानकारी के अनुसार, दीपू चंद्र दास पर कथित तौर पर ईशनिंदा का आरोप लगाकर भीड़ ने हमला किया था। आरोप है कि युवक को पहले बेरहमी से पीटा गया, फिर उसके शव को पेड़ से लटकाकर आग लगा दी गई। इस अमानवीय घटना ने पूरे देश में आक्रोश फैला दिया। गिरफ्तार आरोपियों के नाम आए सामने फअइ द्वारा गिरफ्तार किए गए सात आरोपियों में मोहम्मद लिमोन सरकार (19), मोहम्मद तारेक हुसैन (19), मोहम्मद मानिक मिया (20), इरशाद अली (39), निजुम उद्दीन (20), आलमगीर हुसैन (38) और मोहम्मद मिराज हुसैन अकोन (46) शामिल हैं। वहीं पुलिस ने मोहम्मद अजमोल हसन सगीर (26), मोहम्मद शाहिन मिया (19) और मोहम्मद नजमुल को हिरासत में लिया है।

Facebook: https://www.facebook.com/profile.php?id=100063787346044 Twitter: https://twitter.com/mantrabharat?t=8tJONQ7H-h6EKqqap2tVMw&s=08 Mobile No: 7007837917

मंत्र भारत : RNI-MPHIN/2023/88414 देवांश प्रिंटिंग प्रेस 12/12 विनय नगर सेक्टर-2 ग्वलियर(म.प्र.) से मुद्रित एंव 433 आनंन नगर डबल रोड बहोड़ा ग्वालियर से प्रकाशित एवं सम्पादित।
E-Mail : mantragwalior@gmail.com । सम्पादक : मनीष शुक्ला, मोबाइल : 7007837917 स्थानीय संपादक- आनंद त्रिवेदी । वैधानिक सूचना : मंत्र भारत से संबंधित समस्त विवाद निपटारे का क्षेत्र ग्वालियर न्यायालय होगा।